दैनिक
कारखाने का सफर

वर्ष 6, अंक 349 | भोपाल, रविवार 31 मई, 2026 | ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष, पूर्णिमा 2083 | मूल्य 2 रुपए

बीकानेर में रेत के बवंडर ने दिन को बना दिया रात

दैनिक कारखाने का सफर। एजेंसी बीकानेर

शनिवार दोपहर राजस्थान के बीकानेर में एक भीषण धूल भरी आंधी चली, जिससे शहर के कुछ हिस्से धूल के विशाल गुबार से ढक गए और दृश्यता काफी कम हो गई। इलाके से साझा किए गए वीडियो में तेज हवाओं के कारण सड़कों पर धूल के घने बादल उड़ते हुए दिखाई दे रहे थे, जिससे आसमान गहरा नारंगी-भूरा हो गया और निवासियों को घरों के अंदर शरण लेने के लिए मजबूर होना पड़ा। तेज हवाओं के कारण पेड़ भी बुरी तरह हिल रहे थे। यह धूल भरी आंधी उत्तर पश्चिमी भारत को प्रभावित करने वाले अस्थिर मौसम के व्यापक दौर का हिस्सा है, जहां कई क्षेत्रों में भीषण गर्मी के बाद तेज हवाएं, धूल भरी आंधी और छिटपुट बारिश हुई है। मौसम विज्ञानियों ने चेतावनी दी है कि राजस्थान में मानसून-पूर्व (प्री-मानसून) सीजन के दौरान ऐसे धूल भरे तूफान आना आम बात है, विशेष रूप से तब जब रेगिस्तान की गर्म हवाएं उत्तर भारत में बदल रहे मौसम प्रणालियों के साथ टकराती हैं। फिलहाल किसी गंभीर चोट या बड़े नुकसान की कोई तत्काल रिपोर्ट नहीं मिली है। हालांकि, अधिकारियों ने निवासियों को सतर्क रहने, दृश्यता (विजिबिलिटी) कम होने के दौरान अनावश्यक यात्रा से बचने और जहां तक संभव हो घरों के भीतर रहने की सलाह दी है। भारत मौसम विज्ञान विभाग (IMD) ने आने वाले दिनों में राजस्थान के कुछ हिस्सों में मौसम की गतिविधियां जारी रहने का अनुमान जताया है, जिसमें छिटपुट इलाकों में गरज के साथ बौछारें पड़ने, तेज हवाएं चलने और धूल भरा माहौल बनने की संभावना है। बीकानेर से आ रहे ये नाटकीय दृश्य ऐसे समय में सामने आए हैं जब कई उत्तरी राज्यों में भीषण लू की स्थिति से मानसून से पहले के अधिक अस्थिर मौसम में बदलाव हो रहा है, जिससे बढ़ते तापमान से अस्थायी राहत तो मिल रही है लेकिन धूल भरी आंधी और गरज के साथ बारिश का खतरा बढ़ रहा है।

समाचार संपादक की कलम से
–राहुल कौशिक

पेट्रोल के दामों पर राजनीति नहीं, वास्तविकता को समझने की जरूरत

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

आजकल सोशल मीडिया और राजनीतिक चर्चाओं में पेट्रोल के दाम एक ऐसा विषय बन गए हैं, जिस पर बहुत लोग बिना पूरी जानकारी के अपनी राय दे देते हैं। जैसे ही पेट्रोल के दामों में बदलाव होता है, कुछ लोग सीधे सरकार को दोष देना शुरू कर देते हैं। लेकिन क्या किसी भी मुद्दे को समझने का यही सही तरीका है? क्या केवल आलोचना करने से वास्तविकता बदल जाती है?

भारत एक ऐसा देश है जो अपनी आवश्यकता का अधिकांश कच्चा तेल विदेशों से आयात करता है। अर्थात जिस पेट्रोल और डीज़ल का उपयोग हम प्रतिदिन करते हैं, उसका आधार बनने वाला कच्चा तेल भारत में पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध नहीं है। उसे अंतरराष्ट्रीय बाजार से खरीदना पड़ता है। ऐसे में वैश्विक बाजार में होने वाले उतार-चढ़ाव, डॉलर की कीमत, युद्ध, भू-राजनीतिक तनाव और आपूर्ति की स्थिति का सीधा प्रभाव भारत पर पड़ता है।

फिर भी कुछ लोग ऐसे हैं जो हर बात में केवल सरकार को दोष देने का आसान रास्ता चुन लेते हैं। उन्हें लगता है कि भारत में अमेरिका जैसी सड़कें हों, दुबई जैसे एयरपोर्ट हों, चीन जैसी औद्योगिक ताकत हो, जापान जैसी आधुनिक सुविधाएं हों, सरकारी योजनाओं का लाभ भी मिले, बिजली, पानी, सुरक्षा, स्वास्थ्य और इंफ्रास्ट्रक्चर भी बेहतर हो, लेकिन पेट्रोल लगभग मुफ्त या बेहद सस्ता होना चाहिए। यह सोच भावनात्मक तो हो सकती है, लेकिन आर्थिक रूप से व्यावहारिक नहीं है।

सरकार के पास कोई ऐसा पेड़ नहीं लगा है जिस पर पैसे उगते हों। देश चलाने के लिए संसाधनों की आवश्यकता होती है। सड़कें, एक्सप्रेसवे, रेलवे, मेट्रो, एयरपोर्ट, रक्षा व्यवस्था, शिक्षा, स्वास्थ्य, किसानों की योजनाएं, गरीबों के लिए कल्याणकारी कार्यक्रम और विकास के हजारों कार्य आर्थिक संसाधनों से ही संचालित होते हैं। यदि हम दुनिया के अन्य देशों को देखें तो तस्वीर और स्पष्ट हो जाती है।

देश	पेट्रोल रेट (USD प्रति लीटर)
सऊदी अरब	$0.62
UAE	$0.87
पाकिस्तान	$0.90
जापान	$1.06
भारत	$1.07
अमेरिका	$1.08
चीन	$1.10
द. अफ्रीका	$1.13
नेपाल	$1.18
कनाडा	$1.30
ऑस्ट्रेलिया	$1.33
ब्राज़ील	$1.34
मेक्सिको	$1.36
यूके	$2.14
फ्रांस	$2.32
जर्मनी	$2.33

इन आंकड़ों को देखकर स्पष्ट होता है कि भारत में पेट्रोल की कीमतें कई विकसित देशों की तुलना में कम या प्रतिस्पर्धी स्तर पर हैं। जो लोग दुबई और सऊदी अरब का उदाहरण देते हैं, उन्हें यह भी समझना चाहिए कि वे देश बड़े तेल उत्पादक हैं। उनके पास विशाल तेल भंडार हैं और उनकी परिस्थितियां भारत से पूरी तरह अलग हैं। भारत को तेल खरीदकर लाना पड़ता है, रिफाइन करना पड़ता है और फिर देश के हर कोने तक पहुंचाना पड़ता है।

दुर्भाग्य की बात यह है कि कुछ लोग हर विषय को केवल राजनीति के चश्मे से देखते हैं। उन्हें समस्या का समाधान नहीं चाहिए, बल्कि केवल विरोध का अवसर चाहिए। ऐसे लोगों के लिए तथ्य कम और राजनीतिक बहस अधिक महत्वपूर्ण होती है। वे यह नहीं देखते कि दुनिया के कई विकसित देशों में पेट्रोल भारत से कहीं अधिक महंगा है। वे यह भी नहीं देखते कि अंतरराष्ट्रीय बाजार में तेल की कीमतें बढ़ने पर भारत को भी अतिरिक्त लागत वहन करनी पड़ती है।

लोकतंत्र में आलोचना का अधिकार सभी को है और होना भी चाहिए। लेकिन आलोचना तथ्यों पर आधारित होनी चाहिए। यदि हम केवल सोशल मीडिया की पोस्ट देखकर या आधी-अधूरी जानकारी के आधार पर निष्कर्ष निकालेंगे, तो हम स्वयं भ्रम का हिस्सा बन जाएंगे।

भारत आज दुनिया की सबसे तेजी से आगे बढ़ती अर्थव्यवस्थाओं में शामिल है। देश में आधुनिक एक्सप्रेसवे बन रहे हैं, एयरपोर्ट नेटवर्क बढ़ रहा है, रेलवे का आधुनिकीकरण हो रहा है, डिजिटल भुगतान प्रणाली दुनिया के लिए उदाहरण बन चुकी है और भारत वैश्विक स्तर पर अपनी मजबूत पहचान बना रहा है। इन उपलब्धियों के पीछे आर्थिक संसाधन, योजनाएं और दीर्घकालिक निवेश काम करते हैं।

इसलिए जब भी पेट्रोल के दामों पर चर्चा हो, तो केवल भावनाओं से नहीं बल्कि तथ्यों के आधार पर चर्चा होनी चाहिए। यदि कोई व्यक्ति अमेरिका, दुबई, चीन और जापान जैसी सुविधाएं चाहता है, तो उसे उन देशों की आर्थिक वास्तविकताओं को भी समझना होगा। केवल सुविधाओं की तुलना करना और जिम्मेदारियों को नजरअंदाज करना उचित नहीं है।

एक जिम्मेदार नागरिक का कर्तव्य है कि वह हर विषय को संतुलित दृष्टिकोण से देखे। सवाल पूछे, सुझाव दे, सरकार की कमियों को बताए, लेकिन साथ ही अंतरराष्ट्रीय परिस्थितियों और आर्थिक वास्तविकताओं को भी समझे। क्योंकि मजबूत राष्ट्र केवल सरकारों से नहीं, बल्कि जागरूक और तथ्यपरक सोच रखने वाले नागरिकों से बनते हैं।

आज आवश्यकता इस बात की है कि हम नकारात्मक राजनीति से ऊपर उठकर वास्तविकता को समझें। पेट्रोल के दामों पर बहस जरूर हो, लेकिन बहस तथ्यों पर आधारित हो। तभी हम एक परिपक्व लोकतंत्र और मजबूत राष्ट्र की दिशा में आगे बढ़ सकेंगे।

आईपीएल का महामुकाबला आज
टाइटंस फंसा तूफान में, फ्लाइट लेट, प्रैक्टिस भी नहीं कर सके

दैनिक कारखाने का सफर। एजेंसी नई दिल्ली

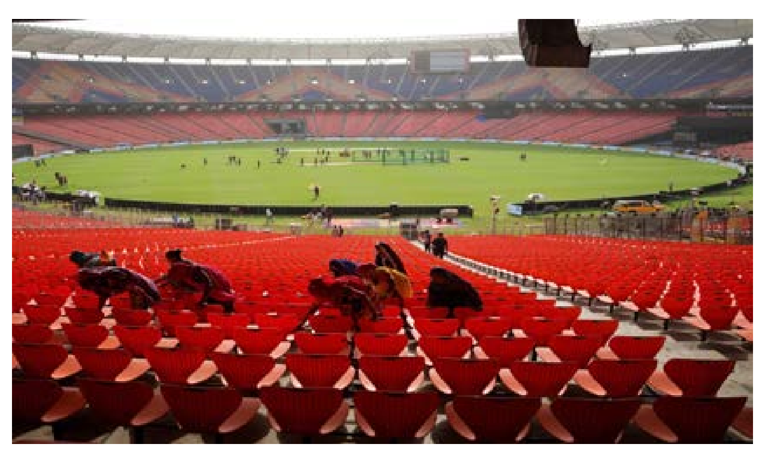

गुजरात टाइटंस की टीम रविवार को होने वाले फाइनल से पहले चढ़ीगढ़ में मजबूरी में रुकना पड़ रहा है। गुजरात की टीम को चंडीगढ़ से शनिवार की शाम को अहमदाबाद के लिए रवाना होना था लेकिन खराब मौसम होने के कारण टीम वहां से निकल नहीं सकी थी। रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु और गुजरात टाइटंस के बीच रविवार को अहमदाबाद के नरेंद्र मोदी स्टेडियम में आईपीएल 2026 का फाइनल होना है। बेंगलुरु की टीम कुछ दिन से वहां प्रैक्टिस कर रही है लेकिन गुजरात की टीम शुक्रवार को अपना दूसरा क्वालीफायर जीतने के बाद शनिवार शाम तक चंडीगढ़ में ही रुकना पड़ा है। ईएसपीएनक्रिकइंफो के मुताबिक गुजरात टाइटंस की टीम को शनिवार को दोपहर में चार्टर फ्लाइट से चंडीगढ़ से रवाना होना था। हालांकि पंजाब और राजस्थान में भारी बारिश के कारण फ्लाइट की उड़ानों में देरी हुई। जिसके चलते चंडीगढ़ में एयरपोर्ट अथॉरिटी गुजरात टाइटंस की चार्टर फ्लाइट सहित कई अन्य उड़ानों को रवाना करने (टेक-ऑफ कराने) में असमर्थ रही। गुजरात की टीम के रात 10 बजे के करीब अहमदाबाद में लैंड होने की संभावना थी। इसके बाद टीम गांधीनगर में अपने टीम होटल गईं होगी, जोकि एयरपोर्ट से आधे घंटे की दूरी पर है।

यह पहली बार है जब किसी टीम को फाइनल से ठीक एक दिन पहले यात्रा करनी पड़ी है, क्योंकि बीसीसीआई ने इस सीजन में तीनों प्लेऑफ मैच तीन अलग-अलग वेन्यू पर कराने का फैसला लिया है, जबकि इसके पहले दो जगह पर प्लेऑफ आयोजित होते थे। रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु की टीम पिछले कुछ दिन से फाइनल की तैयारी में लगी हुई है। बेंगलुरु की टीम बुधवार को ही अहमदाबाद पहुंच गई थी, जिसके बाद से फाइनल से पहले टीम ने दो ट्रेनिंग सेशन भी किए।

रिपोर्ट में कहा गया, ''गुजरात टाइटंस की टीम शुक्रवार को क्वालीफायर-2 जीतकर शनिवार दोपहर चंडीगढ़ से चार्टर विमान के जरिए अहमदाबाद रवाना होने वाली थी। हालांकि, उत्तर-पश्चिम भारत, मुख्य रूप से पंजाब और राजस्थान के आसपास हुई मूसलाधार बारिश के कारण चंडीगढ़ में एयरपोर्ट अथॉरिटी उड़ानों को टेक-ऑफ की मंजूरी नहीं दे सकी। नतीजतन टीम का अहमदाबाद पहुंचना शनिवार रात 10 बजे के बाद संभव हो पाएगा। जिसके बाद वे गांधीनगर स्थित अपने होटल के लिए रवाना होंगे, जो वहां से 30 मिनट की दूरी पर है।''

पाटीदार ने स्वीकार किया है कि आईपीएल फाइनल से पहले उनकी टीम को मिला अतिरिक्त आराम और तैयारी का समय कुछ हद तक फायदेमंद साबित हो सकता है, हालांकि उन्होंने इसे निर्णायक बढ़त मानने से इनकार किया। आरसीबी ने 26 मई को पहले क्वालीफायर में टाइटंस को हराकर सीधे फाइनल में जगह बनाई थी। इस जीत के बाद टीम को 31 मई को होने वाले खिताबी मुकाबले से पहले चार दिनों का विश्राम और तैयारी का मौका मिला। टाइटंस को फाइनल तक पहुंचने के लिए लंबा रास्ता तय करना पड़ा। टीम ने क्वालिफायर-दो खेलकर फाइनल का टिकट हासिल किया, जिससे उसे आराम और तैयारी के लिए अपेक्षाकृत कम समय मिला।

-खेल पेज भी पढ़ें

एनएसई ने ट्रेडिंग की टाइमिंग में किया बदलाव, क्लोजिंग 3:40 पर होगी

दैनिक कारखाने का सफर। एजेंसी नई दिल्ली

नेशनल स्टॉक एक्सचेंज (एनएसई) ने शेयर बाजार के कारोबार में बड़ा बदलाव करते हुए इक्विटी डेरिवेटिव्स सेगमेंट के सामान्य ट्रेडिंग समय को बढ़ाने का फैसला लिया है। इसके तहत ट्रेडिंग की टाइमिंग में 10 मिनट की बढ़ोतरी की गई है। अब डेरिवेटिव्स मार्केट शाम 3:40 बजे तक खुला रहेगा। NSE ने यह भी साफ किया कि डेरिवेटिव्स कॉन्ट्रैक्ट के क्लोजिंग प्राइस तय करने के तरीके में कोई बदलाव नहीं होगा। हालांकि, अब क्लोजिंग प्राइस निकालने के लिए इस्तेमाल होने वाला वॉल्यूम वेटेड एवरेज प्राइस 3:10 बजे से 3:40 बजे के बीच हुए सौदों के आधार पर तय होगा। बता दें कि पहले डेरिवेटिव्स मार्केट की क्लोजिंग 3:30 बजे तक हो जाती थी। हालांकि, प्री-ओपन सेशन और ट्रेड मॉडिफिकेशन विंडो के समय में कोई बदलाव नहीं होगा।

एनएसई ने शुक्रवार को एक सर्कुलर जारी किया। इस सर्कुलर में बताया कि कैश मार्केट में क्लोजिंग ऑक्शन सिस्टम शुरू होने के बाद डेरिवेटिव्स मार्केट के समय को भी उसके अनुरूप किया जा रहा है। सर्कुलर के मुताबिक यह कदम क्लोजिंग ऑक्शन सेशन(CAS) लागू करने के तहत उठाया गया है। CAS शेयर बाजार में दिन के आखिर में होने वाला एक छोटा-सा खास ट्रेडिंग सेशन होता है। इसका मकसद किसी शेयर का फेयर और पारदर्शी क्लोजिंग प्राइस तय करना होता है। CAS के दौरान तय किए गए नए प्राइस बैंड और प्री-ट्रेड रिस्क कंट्रोल नियम डेरिवेटिव्स सेगमेंट पर भी लागू होंगे।

एनएसई ने यह भी कहा कि इस बदलाव को लागू करने से होने वाले कार्यात्मक बदलाव आगामी मॉक ट्रेडिंग सत्रों के दौरान टेस्टिंग के लिए उपलब्ध कराए जाएंगे। ब्रोकर्स को सलाह दी गई है कि वे सुचारू संचालन सुनिश्चित करने के लिए प्रभावी तिथि से पहले अपने ट्रेडिंग एप्लीकेशन्स में संबंधित कॉन्ट्रैक्ट फाइलों को अपडेट कर लें।

भेल कर्मचारियों की समस्याओं को लेकर सीटू यूनियन ने महाप्रबंधक एचआर से किया मुलाक़ात

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

भेल सीटू के महामंत्री रंजीत सिंह ने भेल भोपाल के महाप्रबंधक (मानव संसाधन) श्री टीयू सिंह से मुलाकात की इस दौरान यूनियन पदाधिकारियों ने भेल कर्मियों की विभिन्न समस्याओं को लेकर चर्चा की। प्रमुख रूप से, कर्मचारियों के लिए स्पोर्ट्स क्लब में स्विमिंग पूल की स्थापना, कैंटीन में सुधार, और न्यू टीआरएम में एसी की समस्या के समाधान के लिए चर्चा हुई। यूनियन के महामंत्री रंजीत सिंह ने जीएम एचआर को एक पत्र के माध्यम से मांग किया कि जिस प्रकार भेल झाँसी, हैदराबाद व तिर्ची इकाई में भेल कर्मचारीयों व उनके आश्रितों के लिए स्विमिंग पूल की व्यवस्था है उसी प्रकार कि सुविधा भेल भोपाल इकाई में भी कर्मचारियों व उनके आश्रितों के लिए किया जाय। महाप्रबंधक मानव संसाधन ने यूनियन पदाधिकारियों की बातों को गंभीरता से सुना और इन समस्याओं को जल्द से जल्द हल करने का आश्वासन दिया। उन्होंने बताया कि स्पोर्ट्स क्लब का जो फंड है, वह लगभग एक करोड़ से अधिक है, और उसी का उपयोग करते हुए स्विमिंग पूल का निर्माण का प्रयास किया जाएगा। इसके साथ ही स्पोर्ट्स क्लब के सुचारु रूप से संचालन के लिए सभी प्रतिनिधि यूनियन से एक- एक प्रतिनिधि शामिल करते हुए स्पोर्ट्स कमेटी के गठन का भी सुझाव दिया गया है, ताकि सभी यूनियनों का प्रतिनिधित्व सुनिश्चित हो सके। वर्तमान में कुछ यूनियन विशेष के लोगों के स्पोर्ट्स क्लब में पदस्थ होने के कारण आम कर्मचारी स्पोर्ट्स क्लब से जुड़ने में असहज रहते हैं। इसके साथ साथ कारखाने के अंदर से हो रही स्क्रेप की चोरी के रोकने के सम्बंध पर चर्चा पर प्रबंधन ने बताया की स्क्रेप यार्ड में हाई डेफिनेशन के कैमरे लगाए गये हैं तथा संदिग्ध व्यक्तियों पर कार्यवाही भी की जा रही है।

नए लेखकों को मिलेगा बड़ा मंच : राष्ट्रीय शिक्षा नीति के तहत लिखी जाएंगी ढाई लाख किताबें

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के तहत भारतीय भाषाओं में उच्च शिक्षा की गुणवत्तापूर्ण पाठ्य सामग्री तैयार करने की दिशा में बड़ा कदम उठाया गया है। मध्यप्रदेश भोज मुक्त विश्वविद्यालय में भारतीय भाषा पुस्तक योजना को लेकर राज्य स्तरीय प्रारंभिक बैठक आयोजित की गई। यह बैठक भारतीय भाषा समिति, शिक्षा मंत्रालय भारत सरकार और मध्यप्रदेश भोज (मुक्त) विश्वविद्यालय के संयुक्त तत्वावधान में हुई। बैठक में मध्यप्रदेश के विभिन्न विश्वविद्यालयों के कुलपति, शिक्षाविद, लेखक और विषय विशेषज्ञ शामिल हुए। इस दौरान भारतीय भाषाओं, विशेष रूप से हिंदी में, पाठ्यक्रम आधारित पुस्तकों के लेखन की व्यापक कार्ययोजना पर चर्चा की गई।

भारतीय भाषा समिति, शिक्षा मंत्रालय भारत सरकार के अकादमिक समन्वयक डॉ. चंदन श्रीवास्तव ने बताया कि भारत सरकार की इस महत्वाकांक्षी योजना के तहत अगले तीन वर्षों में 22 भारतीय भाषाओं में करीब 2 लाख 50 हजार पुस्तकें लिखी जाएंगी। इसके लिए केंद्र सरकार ने लगभग 6 हजार करोड़ रुपए का प्रावधान किया है। उन्होंने बताया कि पुस्तकों का लेखन राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुरूप किया जाएगा। इन पुस्तकों को डिजिटल प्लेटफॉर्म 'वन नेशन वन सब्सक्रिप्शन' (ONOS) के माध्यम से उपलब्ध कराया जाएगा। पुस्तकें इंटरैक्टिव स्वरूप में होंगी और विद्यार्थियों को गुणवत्तापूर्ण अध्ययन सामग्री उपलब्ध कराएंगी।

बैठक में वक्ताओं ने कहा कि इस योजना से नए लेखकों का एक बड़ा वर्ग सामने आएगा। राज्यवार उत्कृष्ट लेखकों की सूची तैयार की जाएगी, जो विभिन्न विषयों पर मौलिक और अकादमिक पुस्तकें लिखेंगे। पुस्तक लेखन के लिए लेखकों को प्रशिक्षण, कार्यशालाएं और मानदेय भी दिया जाएगा।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि और प्रवेश एवं शुल्क विनियामक समिति के अध्यक्ष प्रो. रवींद्र कान्हेरे ने कहा कि भारतीय भाषाओं में पाठ्यक्रम आधारित पुस्तकें तैयार करना समय की आवश्यकता है। इससे विद्यार्थियों को मातृभाषा में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा मिलेगी और भारतीय ज्ञान परंपरा को भी बढ़ावा मिलेगा।

मध्यप्रदेश भोज मुक्त विश्वविद्यालय के कुलगुरु प्रो. मिलिंद द दांडेकर ने कहा कि उच्च शिक्षा में अंग्रेजी पर निर्भरता कम करने के लिए भारतीय भाषा पुस्तक योजना महत्वपूर्ण साबित होगी। उन्होंने कहा कि पुस्तकों में सरल और मानक शब्दावली के साथ भारतीय ज्ञान परंपरा का समावेश जरूरी है।

बैठक में निर्णय लिया गया कि पुस्तक लेखन की व्यवस्थित कार्ययोजना के लिए जल्द ही प्रदेश स्तरीय कार्यशाला आयोजित की जाएगी। इसमें विषय विशेषज्ञों और लेखकों को पुस्तक लेखन की प्रक्रिया, गुणवत्ता और तकनीकी पहलुओं की जानकारी दी जाएगी।

स्वच्छ सर्वेक्षण में प्रदेश के 35.69 लाख फीडबैक, सिटीजन फीडबैक में देश में पहले नंबर पर

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

स्वच्छ सर्वेक्षण 2025-26 के अंतर्गत संचालित देशव्यापी 'सिटीजन फीडबैक' (नागरिक प्रतिक्रिया) में मध्य प्रदेश पूरे देश में पहले स्थान पर रहा। प्रदेश के 35.69 लाख से अधिक लोगों ने ऑनलाइन माध्यम से अपनी सहभागिता दर्ज कराई। नगरीय विकास एवं आवास मंत्री कैलाश विजयवर्गीय ने कहा, नागरिकों की अटूट जागरूकता और विभागीय अमले की कर्तव्य निष्ठता के समन्वय से ही प्रदेश स्वच्छता के उच्च शिखर पर है। राज्य स्तर पर स्वच्छ भारत मिशन (शहरी) 2.0 की टीम ने इस वर्ष एक अनूठी '360 डिग्री रणनीति' का क्रियान्वयन किया।

इस समेकित कार्ययोजना के अंतर्गत सभी नगरीय निकायों के सोशल मीडिया हैंडल्स के माध्यम से 60 लाख से अधिक लोगों तक पहुंच स्थापित की गई। इसके अतिरिक्त पारंपरिक और आधुनिक संचार माध्यमों से ऑडियो-वीडियो संदेश और घर-घर जाकर चलाए गए सघन जन-जागरूकता अभियानों से समाज के हर वर्ग को इस पुनीत कार्य से जोड़ा गया।

डिजिटल सहभागिता को सुगम और व्यापक बनाने के उद्देश्य से राज्य स्तर से एक करोड़ से अधिक एसएमएस (SMS) भेजे गए। वहीं, सोशल मीडिया इन्फ्लुएंसर्स की भी मदद ली गई। इसके चलते फीडबैक में प्रदेश देश में नंबर पर आ पाया है। भोपाल की बात करें तो पिछले साल 5.1 हजार फीडबैक दिए गए थे लेकिन इस बार इनकी संख्याा 3.86 लाख से अधिक है।

भोपाल ड्रग्स रैकेट, थ्री लेयर में था नेटवर्क, नाबालिग करते थे 1.5 करोड़ रुपए के कफ-सिरप की सप्लाई

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

भोपाल के गांधीनगर क्षेत्र में स्पेशल टास्क फोर्स (STF) ने नशीले कफ सिरप नेटवर्क का भंडाफोड़ किया है। नाबालिगों और युवाओं को नशे की दलदल में धकेलने वाले मास्टरमाइंड अकील खान समेत 10 को गिरफ्तार किया है। इनमें 3 नाबालिग भी शामिल हैं। मकान देने वाला आकाश भाटिया भी STF की रडार पर है। अकील ने 9 लोगों को अपनी टीम में रखा था। सभी लोगों की अलग-अलग जिम्मेदारियां तय थीं। कोई माल सप्लाई करता था, तो कोई पैकेजिंग करता था। गांधीनगर स्थित डोबरा पटेल सिटी कॉलोनी और मुबारकपुर को कफ सिरप नेटवर्क का हब बना लिया गया था।

STF के DIG राहुल लोढ़ा के मुताबिक, सिटी कॉलोनी से भोपाल के अलग-अलग इलाके और आसपास के जिलों में सप्लाई की जाती थी। नेटवर्क का मास्टरमाइंड अकील खान गाड़ियों की लोडिंग और सप्लाई को मैनेज करता था। पूरे अवैध कारोबार पर उसका पूरा नियंत्रण था।

STF के मुताबिक, गुरुवार-शुक्रवार की दरमियानी रात डोबरा पटेल सिटी कॉलोनी के एक मकान पर छापा मारा गया था। इस कार्रवाई में करीब 50 हजार बोतल नशीला कफ सिरप बरामद किया गया, जिसकी अनुमानित कीमत लगभग डेढ़ करोड़ रुपए बताई जा रही है।

जांच में सामने आया है कि यह पूरा नेटवर्क एक संगठित तरीके से तीन अलग-अलग टीमों में काम कर रहा था। हर टीम को अलग-अलग जिम्मेदारियां दी गई थीं, ताकि पुलिस और प्रशासन की नजरों से बचा जा सके। मुख्य आरोपी अकील खान और उसके दो साथी इस नेटवर्क के सबसे अहम सदस्य थे। अकील खान अपने 3 साथियों के साथ नशीले कफ सिरप को भोपाल शहर और आसपास के ग्रामीण इलाकों में सप्लाई करने का काम करते थे। इसके लिए लोडिंग वाहनों का इस्तेमाल किया जाता था, जिससे माल को आसानी से एक जगह से दूसरी जगह पहुंचाया जा सके। नेटवर्क की दूसरी टीम में चार अन्य आरोपी शामिल थे, जिनका काम सिरप के स्टॉक को संभालना, एक जगह से दूसरी जगह पहुंचाना और उसकी पैकेजिंग बदलना था। यह लोग लगातार लोकेशन बदलकर पुलिस से बचने की कोशिश करते थे। यह नेटवर्क लंबे समय से सक्रिय था और बेहद सुनियोजित तरीके से संचालित किया जा रहा था।

STF ने बताया कि अवैध कारोबार में नाबालिगों का इस्तेमाल किया जा रहा था। तीन बच्चों से कफ सिरप की पैकेजिंग, रैपर बदलने और माल को व्यवस्थित करने जैसे काम कराए जाते थे। बच्चों को इस अवैध नेटवर्क में धकेला गया था। STF को असली जिम्मेदारों की तलाश है।

आरोपी कफ सिरप के असली रैपर हटाकर दूसरे रैपर चढ़ा देते थे, ताकि इसकी पहचान छिपाई जा सके। इसके बाद माल को बाजार में सप्लाई किया जाता था। इस तरीके से बड़ी मात्रा में नशीले सिरप को भोपाल और आसपास के जिलों में खपाया जा रहा था। बरामद सिरप के सैंपल को लैब में भेजा गया है।

गिरफ्तार आरोपियों से मिली जानकारी के आधार पर STF की टीम मुबारकपुर क्षेत्र में लगातार सर्चिंग कर रही है। अधिकारियों को आशंका है कि वहां भी बड़ी मात्रा में अवैध कफ सिरप और उससे जुड़े अहम सबूत मिल सकते हैं। अब पूरे नेटवर्क की सप्लाई चेन को जोड़ा जा रहा है।

साहित्यकार आलोक त्यागी ने सुनाया बशीर साहब की शायरी- शोहरत की बुलंदी तो पल भर का तमाशा है

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

राजधानी की साहित्यिक और सांस्कृतिक संस्थाएं पद्मश्री से सम्मानित विख्यात शायर डॉ. बशीर बद्र को सामूहिक रूप से श्रद्धांजलि अर्पित की गई। श्रद्धांजलि सभा का आयोजन दुष्यंत कुमार स्मारक पांडुलिपि संग्रहालय के राज सदन किया गया। 28 मई को बशीर बद्र के निधन के बाद शहर के साहित्यिक जगत में शोक की लहर है। इसी क्रम में एक मंच पर आकर उन्हें याद किया गया। बशीर बद्र को श्रद्धांजलि देने के लिए रंगकर्मी राजीव वर्मा, शायर बद्र वास्ती, हिंदी कवि विजय बहादुर सिंह, मनीष बादल, आलोक त्यागी समेत कई ख्यात कवि, शायर कार्यक्रम में मौजूद रहे। बद्र वास्ती ने कार्यक्रम की शुरुआत की। कार्यक्रम में मौजूद शायर और गजलकारों ने कहा कि बशीर साहब ने शायरी को जन-जन तक पहुंचाने का काम किया है।

कार्यकम में दुष्यंत कुमार के बेटे साहित्यकार आलोक त्यागी ने बशीर बद्र से जुड़ी यादें साझा करते हुए कहा कि एक बार उनके घर में आग लगने के बाद उन्होंने संडे मेल के लिए बशीर बद्र का इंटरव्यू लिया था। मोती मस्जिद के पास स्थित घर में पहली मुलाकात के दौरान बशीर बद्र ने बेहद आत्मीयता से स्वागत किया और लंबी बातचीत की।

आलोक ने कहा कि बशीर बद्र ने उनसे कहा था कि जिस तरह दुष्यंत कुमार ने गजल को ठेठ हिंदी अदब से निकालकर आम आदमी तक पहुंचाया। उसी तरह वे उर्दू अदब से निकालकर गजल को आम लोगों तक ला रहे हैं। उन्होंने बशीर बद्र का एक शेर भी याद किया— "शोहरत की बुलंदी तो पल भर का तमाशा है, जिस डाल पर बैठे हो, वो टूट भी सकती है।"

आलोक ने कहा कि बशीर बद्र की लोकप्रियता खुदा की देन थी और उनके दर्जनों शेर आज भी लोगों की जुबान पर हैं।

सभा में दुष्यंत कुमार स्मारक पांडुलिपि संग्रहालय, मध्यप्रदेश लेखक संघ, वनमाली सृजन पीठ, मध्यप्रदेश लेखिका संघ, हिन्दी भवन, अभिनव कला परिषद, प्रभात साहित्य परिषद, कला मंदिर, अखिल भारतीय साहित्य परिषद, वरिष्ठ नागरिक मंच और अंतरराष्ट्रीय विश्व मैत्री मंच सहित अन्य संस्थाओं की सहभागिता है। वरिष्ठ रंगकर्मी राजीव वर्मा ने बशीर बद्र के बारे में प्रसंग सुनाया। राजीव वर्मा बोले- इतनी बड़ी शख्सियत से खुलकर बात करने का साहस कभी नहीं जुटा सका वरिष्ठ रंगकर्मी राजीव वर्मा ने बशीर बद्र को श्रद्धांजलि देते हुए कहा कि उनकी शख्सियत हमेशा बेहद आत्मीय और करीब महसूस होती थी। उन्होंने कहा कि कई मुशायरों में बशीर बद्र को सुना, मुलाकात भी हुई, लेकिन इतनी बड़ी शख्सियत से खुलकर बात करने का साहस कभी नहीं जुटा सके। राजीव वर्मा ने बताया कि हाल ही में एक कार्यक्रम में बशीर बद्र की पत्नी से मुलाकात हुई थी। तब पता चला कि वे किसी को पहचान नहीं पा रहे थे और बोल भी नहीं सकते थे। बाद में अखबार में पढ़ा कि अगर उन्हें कोई मिसरा सुनाया जाता तो वे दूसरा मिसरा पूरा कर देते थे। उन्होंने कहा कि यदि यह पहले पता होता तो जरूर उनसे मिलने जाते। उन्होंने कहा कि बशीर बद्र की शायरी की सबसे बड़ी ताकत उसकी पहुंच थी। उनकी ग़ज़लें सिर्फ साहित्यिक मंचों तक सीमित नहीं रहीं, बल्कि छोटे कस्बों और आम लोगों तक भी पहुंचीं। अंत में उन्होंने बशीर बद्र को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए ईश्वर से उन्हें शांति देने की प्रार्थना की।

गतांक से आगे : लोक कल्याण हेतु दादाजी का अवतरण

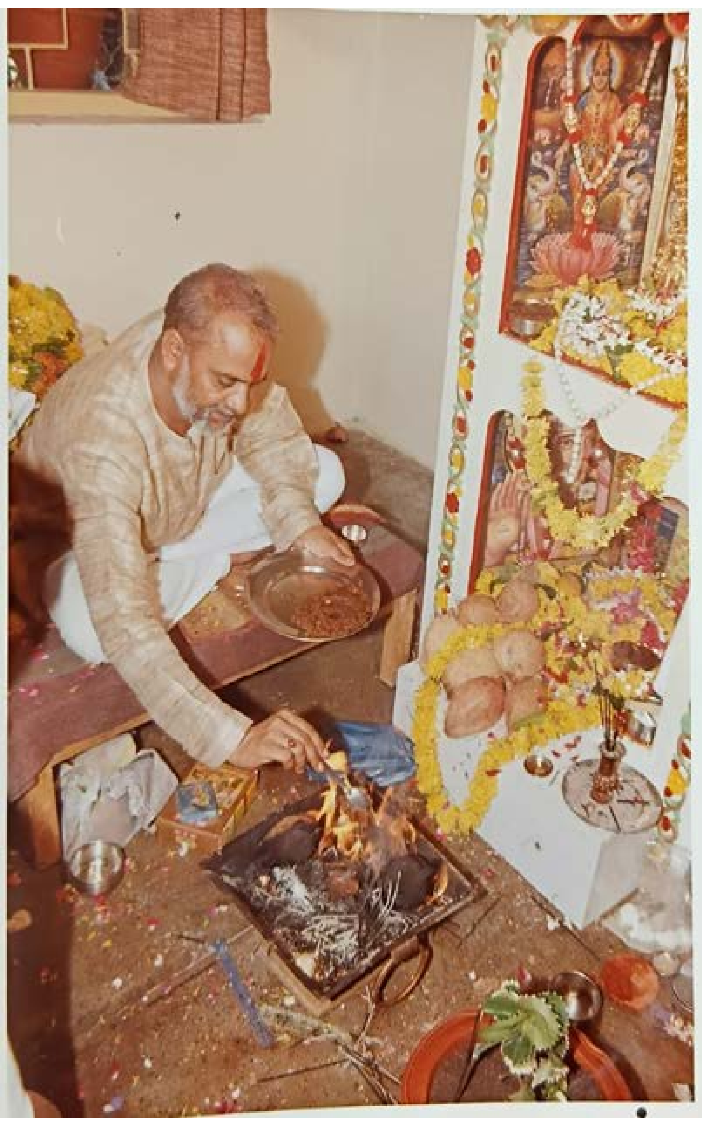

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

भक्त की पुकार सुनकर संकट हरने वाले दादाजी गुरुदेव सन् 1995 की यह एक अत्यंत प्रेरणादायक एवं चमत्कारिक घटना है, जिसे आगरा (उत्तर प्रदेश) निवासी श्रद्धालु श्री धर्मेंद्र ताहिल जी ने अपने जीवन में स्वयं अनुभव किया। यह घटना दादाजी गुरुदेव की असीम कृपा, भक्तवत्सलता तथा अपने भक्तों के प्रति उनकी करुणा को प्रत्यक्ष रूप से प्रदर्शित करती है। एक सोमवार के दिन मैं, गिरिराज वशिष्ठ, अपने साथी धर्मेंद्र ताहिल जी के साथ भोपाल स्थित दादाजी गुरुदेव के दर्शन एवं आशीर्वाद प्राप्त करने हेतु उनके निवास स्थान शिवाजी नगर, साढ़े 6 नंबर स्थित दरबार में पहुँचा। हम दोनों प्रातः होटल में स्नान एवं नित्यकर्म से निवृत्त होकर अत्यंत उत्साह और श्रद्धा के साथ ऑटो रिक्शा द्वारा दादाजी के दरबार के लिए रवाना हुए। यात्रा के दौरान हमारा सामान ऑटो में रखा हुआ था। दादाजी के दर्शन की उत्सुकता इतनी अधिक थी कि दरबार पहुँचने के बाद हम जल्दी-जल्दी में अपना बैग ऑटो में ही भूल गए। उस समय हमारा पूरा ध्यान केवल गुरुदेव के चरणों में उपस्थित होने का था। दरबार में पहुँचकर हमने श्रद्धापूर्वक दादाजी गुरुदेव के चरण स्पर्श किए, पूजन-अर्चन किया तथा उनकी पावन बैठक में सम्मिलित हुए। कुछ समय पश्चात सभी भक्तों के साथ चाय-प्रसाद ग्रहण किया। तभी अचानक धर्मेंद्र ताहिल जी को स्मरण हुआ कि उनका महत्वपूर्ण बैग ऑटो में ही छूट गया है।

यह याद आते ही वे अत्यंत चिंतित और व्याकुल हो उठे। बैग में आवश्यक सामान एवं महत्वपूर्ण वस्तुएँ थीं। उस समय न तो ऑटो का नंबर याद था और न ही चालक की कोई जानकारी। परिस्थिति ऐसी थी कि बैग वापस मिलने की कोई संभावना दिखाई नहीं दे रही थी।

धर्मेंद्र जी की चिंता देखकर दादाजी गुरुदेव मंद-मंद मुस्कुराए। उनके मुखमंडल पर अद्भुत शांति और आत्मविश्वास झलक रहा था।

उन्होंने अत्यंत सहज भाव से कहा

“दरबार में दादाजी के नाम से दो अगरबत्तियाँ लगा दो।” गुरुदेव के आदेश का पालन करते हुए श्रद्धापूर्वक अगरबत्तियाँ अर्पित की गईं। इसके कुछ ही समय बाद ऐसा अद्भुत दृश्य उपस्थित हुआ जिसने वहाँ उपस्थित सभी लोगों को आश्चर्यचकित कर दिया। वही ऑटो चालक दरबार के बाहर आ पहुँचा और बैग लेकर धर्मेंद्र जी को सौंपते हुए बोला भाई साहब, आप अपना बैग ऑटो में भूल गए थे। मैं इसे लौटाने के लिए आया हूँ। आश्चर्य की बात यह है कि मैं इस क्षेत्र से बाहर निकल ही नहीं पा रहा था। बार-बार प्रयास करने के बाद भी मेरा ऑटो इसी दिशा में घूमकर आ जाता था। अंततः मुझे लगा कि किसी अदृश्य शक्ति की प्रेरणा से मुझे यह बैग उसके मालिक तक पहुँचाना चाहिए। यह सुनकर सभी लोग आश्चर्यचकित रह गए।

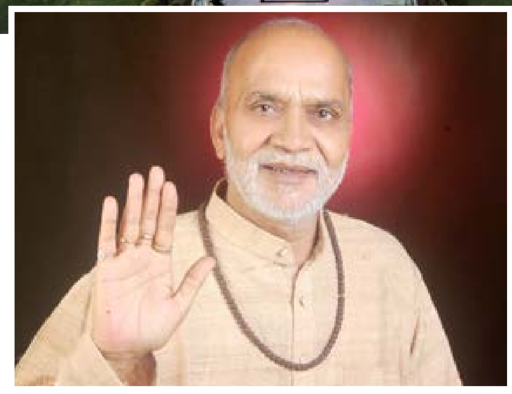

धर्मेंद्र ताहिल जी की आँखें श्रद्धा और भाव-विभोरता से भर उठीं। उन्होंने समझ लिया कि यह सब दादाजी गुरुदेव की दिव्य कृपा का ही परिणाम है। ऑटो चालक ने भी दादाजी गुरुदेव को श्रद्धापूर्वक प्रणाम किया और उनके प्रति अपनी आस्था व्यक्त की। धर्मेंद्र ताहिल जी ने गुरुदेव के चरणों में नतमस्तक होकर कृतज्ञता प्रकट की। उस दिन उन्हें प्रत्यक्ष अनुभव हुआ कि दादाजी गुरुदेव केवल आध्यात्मिक मार्गदर्शक ही नहीं, बल्कि अपने भक्तों के प्रत्येक छोटे-बड़े संकट के संरक्षक भी हैं। जब कोई भक्त सच्ची श्रद्धा, विश्वास और समर्पण के साथ उनकी शरण में आता है, तब गुरुदेव उसकी समस्याओं का समाधान कर उसे मानसिक शांति और आत्मिक बल प्रदान करते हैं।

यह घटना आज भी इस सत्य की साक्षी है कि दादाजी गुरुदेव की कृपा असीम है। उनके दरबार में आने वाला प्रत्येक श्रद्धालु यदि निष्कपट भाव, पूर्ण विश्वास और भक्ति के साथ प्रार्थना करता है, तो उसकी मनोकामनाएँ पूर्ण होती हैं तथा जीवन की कठिनाइयों का मार्ग प्रशस्त होता है। जय श्री दादाजी गुरुदेव।

श्री सिद्ध चक्र महामंडल विधान शुरू, उमड़ा भक्ति का सैलाब

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

आचार्य संभव सागर महाराज के शिष्य मुनि संभव सागर महाराज के सा संघ सानिध्य में चौक धर्म शाला में श्री सिद्ध चक्र विधान शुरू हुआ, , भगवान जिनेंद्र का अभिषेक शांति धारा के साथ विशेष पूजा अर्चना की गई, प्रवक्ता अंशुल जैन ने बताया अनुष्ठान के पुण्यर्जक परिवार श्रीमती पांचू बाई सुहाग मल जैन ऋषभ मंजू जैन हे, चौक जिनालय से गाजे बाजे के साथ घट यात्रा निकली, कमल श्री, विनोद विपिन एम पी टी परिवार ने ध्वजा रोहण किया,प्रभु की भक्ति में भक्ति नृत्य हुआ, अनुष्ठान में अविनाश भैया के निर्देशन में मंडल शुद्धि, पात्र शुद्धि, सकलीकरण की क्रिया मंत्रोच्चार के साथ की गई, मुनि संभव सागर महाराज ने अनुष्ठान का महत्व बताते हुए कहा धार्मिक अनुष्ठान के आयोजन में परिणामों की विशुदि आवश्यक हे, शत्रुता मित्रता हर परिस्थिति में भावना स्थिर रखे, इस अवसर पर प्रमुख पात्रों सो धर्म इंद्र प्रियंका महेंद्र कुबेर आशा विजेंद्र महाज्ञानायक प्रतिभा सचिन यज्ञ नायक पूर्ति शशांक आदि ने विधि विधान से क्रिया की समाज के अनेक लोग मौजूद थे।

समाज सेवा, स्वच्छता एवं धार्मिक जागरूकता को मिलेगा नया आयाम

आज रविवार को “मंदिर चलो अभियान” के अंतर्गत श्री संत नामदेव मंदिर परिसर में विशेष स्वच्छता एवं सेवा अभियान

दैनिक कारखाने का सफर।
भोपाल

नामदेव समाज विकास परिषद, मध्य प्रदेश द्वारा समाज में सेवा, संस्कार, स्वच्छता एवं धार्मिक चेतना को सुदृढ़ करने के उद्देश्य से संचालित “मंदिर चलो अभियान” के अंतर्गत आज रविवार को प्रातः 7:30 बजे श्री संत नामदेव मंदिर एवं सामुदायिक भवन परिसर, जवाहर चौक, 12 दफ्तर के पास, भोपाल में विशेष स्वच्छता एवं सेवा अभियान आयोजित किया जाएगा।

परिषद के नवनिर्वाचित अध्यक्ष राजेंद्र कुमार नामदेव, कोषाध्यक्ष भीकम सिंह नामदेव एवं महामंत्री सुभाष चंद्र वर्मा के नेतृत्व में आयोजित यह अभियान समाज में सेवा, संगठन, संस्कार एवं धार्मिक जागरूकता को बढ़ावा देने की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल है।

श्री श्री 1008 श्री दादाजी गुरुदेव चैरिटेबल ट्रस्ट के अध्यक्ष शिवरतन नामदेव, ट्रस्टी जीवन नामदेव तथा परिषद की स्वच्छता एवं सेवा टीम ने बताया कि इस अभियान के माध्यम से मंदिर परिसर की स्वच्छता, सौंदर्यीकरण एवं सेवा कार्य किए जाएंगे, जिससे श्रद्धालुओं को स्वच्छ एवं पवित्र वातावरण प्राप्त हो सके।

मंदिर सेवा समाज और संस्कृति का आधारपरिषद पदाधिकारियों ने कहा कि मंदिर केवल पूजा-अर्चना का स्थान नहीं, बल्कि हमारी संस्कृति, आस्था, आध्यात्मिक परंपरा और सामाजिक एकता का केंद्र है। मंदिर की स्वच्छता एवं सेवा प्रत्येक समाजजन का नैतिक और धार्मिक कर्तव्य है। ऐसे अभियान समाज में सेवा भावना, अनुशासन, समर्पण और सामूहिक उत्तरदायित्व को मजबूत करते हैं।

समस्त समाजजनों से सहभागिता का आग्रह नामदेव समाज विकास परिषद ने सभी समाज बंधुओं, मातृशक्ति, युवा साथियों एवं श्रद्धालुओं से अनुरोध किया है कि वे आज के इस पावन सेवा अभियान में अधिक से अधिक संख्या में उपस्थित होकर अपना योगदान प्रदान करें और समाज को संगठित, संस्कारित एवं जागरूक बनाने के इस प्रयास को सफल बनाएं। “सेवा ही संस्कार है, स्वच्छता ही श्रद्धा है और संगठन ही समाज की शक्ति है।”

भोपाल में पहली बार आयोजित हुआ महिला ज्योतिष सम्मेलन, देशभर की 100 से अधिक महिला ज्योतिषियों ने की सहभागिता

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

राजधानी भोपाल के मालवीय नगर स्थित रत्नामाला हॉल में 30 मई को महिलाओं पर केंद्रित एक दिवसीय “वीमेन एस्ट्रोलॉजिकल कॉन्क्लेव” का भव्य आयोजन किया गया। भोपाल शहर में इस प्रकार का यह पहला सम्मेलन रहा, जिसमें देश के विभिन्न राज्यों से 100 से अधिक महिला ज्योतिषियों ने भाग लेकर ज्योतिष विज्ञान के विविध आयामों पर अपने विचार साझा किए।

सम्मेलन में हैदराबाद, दिल्ली, मुंबई, इंदौर, उज्जैन, वाराणसी सहित देश के अनेक शहरों से आईं विदुषी ज्योतिषाचार्यों ने मेडिकल एस्ट्रोलॉजी, ज्योतिष शास्त्र और मानव जीवन पर उसके प्रभाव जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर शोधपरक प्रस्तुतियां दीं। वक्ताओं ने ज्योतिष के माध्यम से स्वास्थ्य, जीवन प्रबंधन एवं आध्यात्मिक उन्नति के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डाला।

कार्यक्रम के दौरान ज्योतिषम की एस्ट्रो शक्ति विंग द्वारा तैयार किए गए “नक्षत्र कैलेंडर” का भी विधिवत विमोचन किया गया। इस कैलेंडर को ज्योतिषीय ज्ञान और नक्षत्रों की उपयोगिता को आमजन तक पहुंचाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल बताया गया।

सम्मेलन में भोपाल की प्रसिद्ध टैरो रीडर श्रीमती कहकशा सक्सेना को विशेष रूप से सम्मानित किया गया। उन्हें भोपाल में पहली बार टैरो कार्ड रीडिंग को लोकप्रिय बनाने और इस क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान देने के लिए सम्मान प्रदान किया गया। साथ ही नक्षत्र कैलेंडर में भी उनके योगदान एवं परिचय को स्थान दिया गया।

कार्यक्रम में आयोजक प्रतीश सक्सेना, सेलिब्रिटी ज्योतिषाचार्य शशिकांत पढ़वाल तथा कृष्णा प्रेमानन्द महाराज ने कहकशा सक्सेना को सम्मानित किया।

वक्ताओं ने कहा कि महिलाओं की बढ़ती भागीदारी ने ज्योतिष के क्षेत्र को नई दिशा और नई ऊर्जा प्रदान की है। सम्मेलन में उपस्थित प्रतिभागियों ने इसे महिलाओं के ज्ञान, नेतृत्व और आध्यात्मिक सशक्तिकरण का प्रभावी मंच बताते हुए ऐसे आयोजनों को भविष्य में भी निरंतर आयोजित करने की आवश्यकता पर बल दिया।

भोपाल के गोविंदपुरा में लकड़ी फैक्ट्री में लगी आग को 100 टैंकर पानी डालकर बुझा पाए

दैनिक कारखाने का सफर। भोपाल

भोपाल के गोविंदपुरा इंडस्ट्रियल एरिया में शुभम एंटरप्राइजेस फैक्ट्री में आग लग गई। फैक्ट्री में कई टन लकड़ी, केमिकल, थिनर आदि भरा था। इससे आग ज्यादा भभक गई। नगर निगम की दमकलों ने जैसे-तैसे आग पर काबू पाया। बिल्डिंग के स्ट्रक्चर को तोड़कर आग बुझाई। हालांकि, शनिवार दोपहर 12 बजे तक आग सुलगती रही।

आग लगने की घटना शुक्रवार-शनिवार की देर रात हुई। सूचना मिलने पर गांधीनगर, गोविंदपुरा, कोलार, बैरागढ़, फतेहगढ़, आईएसबीटी, कबाड़खाना फायर स्टेशन से दमकलें और पानी के टैंकर पहुंचे। सुबह 9 बजे तक आग की लपटें काबू में आ पाईं, लेकिन इसके बाद भी लकड़ी और केमिकल में आग भभकती रही। इसलिए दमकलें तैनात की गई हैं।

फायर प्रभारी सौरभ पटेल, फायर फाइटर पंकज यादव, सहायक प्रभारी विजय त्रिपाठी समेत निगम के 50 से ज्यादा अधिकारी-कर्मचारी रातभर जुटे रहे।

दरवाजे-ब्लैक बोर्ड बनते हैं जानकारी के अनुसार, जिस फैक्ट्री में आग लगी, उसमें बड़े स्तर पर प्लाईवुड, लकड़ी के दरवाजे और ब्लैक बोर्ड बनाए जाते हैं। फैक्ट्री में कई टन लकड़ी का सामान भरा हुआ था। वहीं, उसमें काम आने वाले केमिकल, थिनर भी रखा था। इसलिए पानी डालने के बाद भी आग काबू में नहीं आ पा रही थी।

फायर फाइटर पंकज ने बताया कि दो जेसीबी की मदद से फैक्ट्री की बिल्डिंग का स्ट्रक्चर गिरा गया। इसके बाद जेसीबी से ही लकड़ी अलग-अलग की गई। फिर आग बुझाने का काम हुआ। केमिकल की वजह से आग बुझने की बजाय भड़क रही थी।

आसपास की फैक्टरियों को बचाया प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार, शुभम इंटरप्राइजेस के पास में ही तीन से चार फैक्ट्री थी। यह आग की चपेट में न आए, इसलिए निगम अमले को मशक्कत करना पड़ी। कनेक्टिंग पाइंट पर लगातार पानी डाला गया। इससे आग आगे नहीं बढ़ सकी। शार्ट सर्किट से आग लगने की संभावना जानकारी के अनुसार, फैक्ट्री में आग लगने की वजह शार्ट सर्किट बताया जा रहा है। इसकी पुलिस जांच कर रही है। आग की वजह से करोड़ों रुपए का नुकसान होना सामने आया है। आग बुझाने में करीब 100 टैंकर पानी लग गया।

दो चुनौतियां, एक सबक!

सफल औद्योगिक राष्ट्र वे रहे हैं, जिन्होंने जिस उत्पाद पर ध्यान केंद्रित किया, उसकी पूरी आपूर्ति शृंखला अपने यहां स्थापित की। सफलता का एक सूत्र यह भी है कि उत्पादित वस्तुओं का एक बड़ा घरेलू बाजार भी हो। दुनिया भर में सेमीकंडक्टर उद्योग इस समय 'मेमफ्लेशन' की चुनौती का सामना कर रहा है। इस शब्द का अर्थ है मेमरी चिप्स की कमी के कारण बढ़ी महंगाई। मेमरी चिप्स की कीमत आसमान पर है, जिससे सेमीकंडक्टर महंगे हो गए हैं। इनका भारी असर उपभोक्ता इलेक्ट्रॉनिक्स उत्पादों- खासकर मोबाइल फोन के उत्पादन पर पड़ा है। भारत के लिए ये घटनाक्रम इसलिए महत्त्वपूर्ण है कि मेक इन इंडिया और चाइना+1 रणनीति की कोई सफलता अपने देश में है, तो वह मोबाइल फोन की मैनुफैक्चरिंग (अथवा असेंबलिंग) है। हालिया वर्षों में भारत से मोबाइल फोन का निर्यात तेजी से बढ़ा है। मगर साथ ही मोबाइल फोन के पाट-पुर्जों का आयात भी बढ़ा है, जो ज्यादातर चीन, दक्षिण कोरिया या ताइवान जैसे देशों से होता है। जो चीजें बाहर से आती हैं, उनमें मेमरी चिप्स भी हैं। नतीजतन, ताजा ट्रेंड से भारत स्थित कारखानों की मुश्किलें बढ़ी हैं। एक अन्य खबर है कि अमेरिका में आयात शुल्क संबंधी जारी अनिश्चय के कारण भारत से सोलर मॉड्यूल का निर्यात बुरी तरह प्रभावित हुआ है। इस वर्ष की पहली तिमाही में सिर्फ एक को छोड़कर अमेरिका के लिए बाकी सभी भारतीय कंपनियों का निर्यात शून्य रहा। सोलर पैनल्स पर ट्रंप प्रशासन ने 230 फीसदी टैरिफ लगा रखा है, जबकि भारतीय सौर उद्योग का अमेरिका प्रमुख बाजार है। तो सार यह कि जहां मोबाइल फोन उद्योग आयात निर्भरता के कारण पैदा हुई चुनौती झेल रहा है, वहीं सौर ऊर्जा उद्योग निर्यात निर्भरता संबंधी। तो सबक क्या है? सफल औद्योगिक राष्ट्र वे रहे हैं, जिन्होंने जिस उत्पाद पर ध्यान केंद्रित किया, उसकी पूरी आपूर्ति शृंखला अपने यहां स्थापित की। इसीलिए इंडस्ट्रीयल पार्कों को इतनी अहमियत दी जाती है। साथ ही सफलता का एक सूत्र यह भी है कि उत्पादित वस्तुओं का एक बड़ा घरेलू बाजार हो, जो भू-राजनीतिक एवं व्यापार जनित संकटों के समय संबंधित उद्योग का सहारा बना रहे। भारत में उद्यम के जो सफल क्षेत्र हैं, अब साफ है कि उनमें इन पहलुओं की उपेक्षा की गई। उन्हें अर्थव्यवस्था के समग्र विकास की सोच से इतर स्थापित किया गया। अब उसकी कीमत चुकानी पड़ रही है।

नए चेहरे क्या दिखेंगे सरकार में!

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने जब से मंत्रिपरिषद की बैठक की है और मंत्रियों के कामकाज की समीक्षा हुई है तब से मंत्रिमंडल में फेरबदल की चर्चा चल रही। 20 जून तक फेरबदल की बात कही जा रही है और उससे पहले नितिन नबीन की टीम के गठन की चर्चा है। कहा जा रहा है कि मोदी सरकार के कई मंत्री, जिनको संगठन के काम का बहुत अनुभव है और जो हर जगह चुनाव जिताने में महारत रखते हैं उनको संगठन में भेजने की चर्चा है। कहा जा रहा है कि सरकार में नए चेहरों के लिए जगह बनाई जा रही है। उत्तर प्रदेश और बिहार से नए चेहरे सरकार में लाए जा सकते हैं। चर्चा तो राघव चड्ढा को भी मंत्री बनाने की थी। लेकिन उनको पिछले दिनों संसद की याचिका समिति का अध्यक्ष बना दिया गया। उसके बाद उनकी चर्चा थम गई है। फिर सवाल है कि क्या अरविंद केजरीवाल की पार्टी छोड़ कर भाजपा में आए नेताओं में से किसी को मंत्री नहीं बनाया जाएगा?

भाजपा के राष्ट्रीय प्रवक्ता सुधांशु त्रिवेदी के मंत्री बनने की चर्चा है। इसी तरह उत्तर प्रदेश से एक दूसरे ब्राह्मण नेता हरीश द्विवेदी की भी चर्चा हो रही है। हालांकि यह सुनने में आ रहा है कि हरीश द्विवेदी को नितिन नबीन की टीम में महासचिव बनाया जा सकता है। जो हो इन दोनों ब्राह्मण नेताओं को कुछ बड़ा मिलने की चर्चा है। हर बार की तरह तमिलनाडु के पूर्व प्रदेश अध्यक्ष के अन्नामलाई को राज्यसभा भेजने और केंद्र में मंत्री बनाने की चर्चा है। लेकिन उससे पहले उनको राज्यसभा भेजना होगा। बिहार से नए चेहरे के तौर पर विवेक ठाकुर के नाम की चर्चा है। लेकिन मुश्किल यह है कि उनको मंत्री तभी बनाया जाएगा, जब गिरिराज सिंह की विदाई होगी। उत्तराखंड में चुनाव से पहले भाजपा के मीडिया प्रभारी अनिल बलूनी को मंत्री बनाए जाने की चर्चा है तो अनुराग ठाकुर की सरकार में वापसी की भी खबरें हैं।

हीट वेव की गिरफ्त में भारत!

बदलती जलवायु के कारण भारत सहित दुनिया के अनेक हिस्से भीषण हीट वेव की चपेट में है। अब यह संकट पारंपरिक क्षेत्रों से निकलकर तटीय इलाकों तक फैल चुका है। अंधाधुंध शहरीकरण, घटती हरियाली और कंक्रीट के बढ़ते निर्माण से 'अर्बन हीट आइलैंड' का प्रभाव बढ़ रहा है, जिससे दिन और रातें अत्यधिक गर्म हो रही हैं। राजस्थान के बाड़मेर से लेकर दिल्ली की गलियों और विदर्भ के मैदानों तक पारा 45 डिग्री सेल्सियस के स्तर को पार कर चुका है। यह केवल बढ़ते तापमान का आंकड़ा नहीं है बल्कि यह एक गहराता सार्वजनिक स्वास्थ्य संकट और आर्थिक चेतावनी है। हीट वेव अब केवल मौसमी असुविधा नहीं बल्कि सार्वजनिक स्वास्थ्य, अर्थव्यवस्था और मानव अस्तित्व के लिए गंभीर संकट बन चुकी है। बढ़ते तापमान, घटती हरियाली और कंक्रीट के फैलते जंगलों ने जीवन को लू की लपटों में समेट दिया है। मौसम विभाग और पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय के ताजा आंकड़ों ने एक डरावनी तस्वीर पेश की है। पिछले चार दशकों में हीट वेव (लू) से होने वाली मौतों में 62 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। गौर करने वाली बात यह है कि हीट वेव अब केवल अपने पारंपरिक गढ़ (उत्तर-पश्चिम और मध्य भारत) तक सीमित नहीं रही बल्कि इसने दक्षिण भारत के उन तटीय इलाकों को भी अपनी चपेट में ले लिया है, जो ऐतिहासिक रूप से कम ताप प्रभावित रहते थे। अध्ययन बताते हैं कि 1981 से 2000 के बीच लू की औसत अवधि जहां 2.5 से 5.5 दिन थी, वहीं 2001 से 2020 के बीच यह बढ़कर 8.5 दिन तक पहुंच गई। लू का भौगोलिक दायरा भी 11.9 लाख वर्ग किलोमीटर से फैलकर 18.1 लाख वर्ग किलोमीटर हो चुका है। यह विस्तार बताता है कि जलवायु परिवर्तन अब भविष्य की आशंका नहीं, वर्तमान की कड़वी हकीकत है। हमारे शहर कंक्रीट के जंगलों में तब्दील हो चुके हैं, जो दिनभर गर्मी सोखते हैं और रात में उसे मुक्त करते हैं, जिससे 'अर्बन हीट आइलैंड' का प्रभाव पैदा होता है। इस तपती आग में सबसे अधिक जोखिम उन लोगों (रेहड़ी-पटरी वाले, निर्माण श्रमिक और दिहाड़ी मजदूर) का है, जो खुले आसमान के नीचे अपना वजूद तलाशते हैं। इनके पास न तो कूलिंग सेंटर की सुविधा है और न ही काम के घंटों में लचीलापन। इसके साथ ही बच्चे और बुजुर्ग इस बढ़ते 'डिस्कंफर्ट इंडेक्स' के सबसे आसान शिकार बन रहे हैं। वैज्ञानिकों के मुताबिक तापमान में वृद्धि से आगामी वर्षों में हीट वेव, गर्मी का मौसम ज्यादा समय तक रहने और सर्दी के मौसम का समय घटने जैसी स्थितियां पैदा होंगी। इस बारे में वैज्ञानिकों का स्पष्ट कहना है कि जिस जलवायु परिवर्तन के बारे में अब तक हम केवल पढ़ते-सुनते रहे थे, वह अब हमारे सामने आकर खड़ा हो गया है। भारत में मई का महीना गर्म हवाओं (लू) का चरम समय होता है और लू की घटनाओं को भी मौसम में दिन-प्रतिदिन बदलाव का स्वाभाविक हिस्सा माना जाता है लेकिन चिंता की बात यही है कि लू की तीव्रता लगातार वर्ष दर वर्ष बढ़ रही है। पिछले करीब डेढ़ दशकों में 2009, 2010, 2016, 2017 और 2022 भारत में रिकॉर्ड किए गए पांच सबसे गर्म वर्ष रहे। आईएमडी के मुताबिक 15 सबसे गर्म वर्षों में से 11 वर्ष 2008 से 2022 के बीच ही दर्ज किए गए। यह जानना भी जरूरी कि हीट वेव आखिर है क्या? जैसा कि नाम से ही जाहिर है, हीट वेव अत्यधिक गर्म मौसम की अवधि है, जो प्रायः दो या ज्यादा दिनों तक रहती है। जब तापमान किसी क्षेत्र के सामान्य औसत तापमान से अधिक हो जाता है तो उसे 'हीट वेव' कहा जाता हं। आईएमडी के अनुसार मैदानी इलाकों का अधिकतम तापमान जब 40 डिग्री सेल्सियस तक और पहाड़ी क्षेत्रों का तापमान 30 डिग्री सेल्सियस तक पहुंच जाता है तो लू चलने लगती है और यदि तापमान 47 डिग्री सेल्सियस तक पहुंच जाता है तो यह खतरनाक लू की श्रेणी में कही जाती है। इसी प्रकार तटीय क्षेत्रों में जब तापमान 37 डिग्री

सेल्सियस हो जाता है तो लू चलने लगती है। हीट वेव के कारण लोगों के बीमार होने और हीट स्ट्रोक का खतरा बहुत बढ़ जाता है तथा सैंकड़ों लोगों की मौत हो जाती है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार 1998 से 2017 के बीच हीट वेव के कारण 1.66 लाख से ज्यादा लोगों की मौत हुई थी और यह आंकड़ा अब वर्ष दर वर्ष तेजी से बढ़ रहा है। आईआईटी खड़गपुर के एक अध्ययन से यह स्पष्ट हो चुका है कि तापमान में वृद्धि तथा लू का मानव शरीर पर व्यापक असर पड़ रहा है। गर्म हवाओं से ब्रेन स्ट्रोक, हृदयाघात, नसों में खून के थक्के जमने की आशंका, स्थायी विकलांगता का खतरा बढ़ जाता है और इससे मृत्यु दर में भी वृद्धि हो सकती है। विशेषज्ञों के अनुसार, हीट वेव बाढ़ के बाद दूसरी सबसे घातक आपदा है, जो मानव स्वास्थ्य के लिए गंभीर चुनौतियां पेश कर रही है। लू का असर हृदय तथा फेफड़े जैसे अंगों पर सर्वाधिक पड़ता है, जो बेहद खतरनाक हो सकता है। हीट वेव से ऐसे लोगों की स्थिति और खराब होने की संभावना होती है, जो हृदय रोग, मधुमेह, उच्च रक्तचाप, गुर्दे की बीमारी इत्यादि समस्याओं से पीड़ित हैं। आईएमडी के मुताबिक वैसे तो हर साल दिल्ली, उत्तर प्रदेश, हरियाणा, पंजाब, राजस्थान, गुजरात, बिहार, झारखंड, पश्चिम बंगाल, ओडिशा, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, कर्नाटक, आंध्र प्रदेश, तेलंगाना इत्यादि उत्तर पश्चिमी भारत, मध्य, पूर्व और उत्तर प्रायद्वीपीय भारत के मैदानी इलाकों में मार्च से जून के दौरान हीट वेव का दौर चलता है लेकिन जैसे-जैसे पृथ्वी की जलवायु गर्म होती जा रही है, दिन और रात भी सामान्य से अधिक गर्म होते जा रहे हैं, जिससे हीट वेव की घटनाएं बढ़ रही हैं और मौतों तथा बीमारियों की आशंका भी बढ़ रही है। प्रश्न यह है कि भारत में हीट वेव को लेकर ऐसी स्थिति क्यों निर्मित हो रही है? पिछले 30 वर्षों के तापमान तथा गर्म हवाओं का आकलन करते हुए आईआईटी खड़गपुर के एक अध्ययन में यह स्पष्ट किया गया था कि घटती हरियाली, शहरीकरण तथा कंक्रीट से निर्माण के कारण ही अब प्रतिवर्ष हीट वेव में वृद्धि हो रही है। प्रायः देखा जाता है कि एक ही शहर में कुछ जगहों पर उच्च तापमान दर्ज किया जाता है तो कुछ जगहों पर तापमान कम रहता है। कुछ स्थानीय कारण इसके लिए जिम्मेदार होते हैं। दरअसल अधिक हरे-भरे इलाकों में तापमान कम दर्ज किया जाता है जबकि चारों ओर बसी कालोनियों तथा ऊंची-ऊंची इमारतों वाले इलाकों में तापमान ज्यादा दर्ज होता है। तकनीकी भाषा में इसे 'अर्बन हीट आईलैंड इफैक्ट' कहा जाता है।

पेड़-पौधों की कमी, अधिक शहरीकरण तथा कंक्रीट से अधिक निर्माण इत्यादि विविध कारणों से शहर ज्यादा तप रहे हैं। इसके पीछे एक बड़ी वजह शहरों में निरन्तर बढ़ता जनसंख्या घनत्व भी है। जनसंख्या का घनत्व बढ़ते जाने से हरियाली नष्ट हो रही है और शहरों में हरे-भरे प्राकृतिक क्षेत्रों को भी सीमेंट तथा कंक्रीट के तपते जंगलों में तब्दील किया जा रहा है। दुनियाभर में विभिन्न शोधों के आधार पर वैज्ञानिक जलवायु संकट को ही लू के लिए जिम्मेदार मान रहे है, जिनका कहना है कि शहरीकरण तथा जनसंख्या घनत्व इसमें बड़ा योगदान देते हैं। विश्व मौसम विज्ञान संगठन (डब्ल्यूएमओ) के मुताबिक लू से अर्थव्यवस्था को चौतरफा नुकसान होता है। डब्ल्यूएमओ का कहना है कि बढ़ते तापमान का अर्थ हीट वेव का बढ़ना, बहुत ज्यादा मात्रा में बर्फ का पिघलना, समुद्र जलस्तर का बढ़ना तथा मौसम की चरम घटनाओं का और ज्यादा विनाशकारी होना है, जिसका सीधा प्रभाव पर्यावरण, स्वास्थ्य, खाद्य सुरक्षा और सतत विकास पर पड़ेगा। इतिहास के सबसे गर्म वर्षों में लगभग सभी साल पिछले तथा इस दशक से ही रहे हैं। ब्रिटिश मौसम कार्यालय के एक अध्ययन में शोधकर्ताओं ने कहा है कि यदि जलवायु पविर्तन नहीं हो रहा होता तो ऐसा चरम तापमान प्रत्येक 312 वर्षों में एक बार ही देखने को मिलता। अध्ययन में शोधकर्ताओं ने भारत और पाकिस्तान में हर तीन साल बाद प्रचण्ड लू की आशंका जताते हुए दावा किया कि जलवायु परिवर्तन गर्मी की तीव्रता को जिस तेजी से बढ़ा रहा है, उससे इन क्षेत्रों के लोगों को आने वाले वर्षों में सौ गुना ज्यादा लू के थपेड़े झेलने पड़ सकते हैं। बहरहाल, अत्यधिक तापमान से जहां सार्वजनिक और निजी क्षेत्रों में प्राथमिक तथा माध्यमिक स्तर की स्वास्थ्य प्रणालियों की चिंता बढ़ जाती है, वहीं हीट वेव का श्रमिकों की उत्पादकता पर भी प्रतिकूल असर पड़ता है, जिससे देश की समग्र अर्थव्यवस्था प्रभावित होती है। अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन (आईएलओ) की एक रिपोर्ट के अनुसार भारत अत्यधिक गर्मी के कारण करीब 101 अरब घंटे खो देता है, जो पूरी दुनिया में सर्वाधिक है और 3.5 करोड़ लोगों द्वारा एक वर्ष में 8 घंटे कार्य करने वाले लोगों द्वारा किए गए कार्य के बराबर है। आईएलओ की रिपोर्ट में भीषण गर्मी तथा लू के कारण 2030 तक दुनियाभर में अर्थव्यवस्था को 4.2 ट्रिलियन डॉलर की क्षति का अनुमान लगाया गया है। भारत के संदर्भ में इम्पीरियल कॉलेज में जलवायु विज्ञान के सीनियर लेक्चरर डॉ. फ्रेडरिक औटो कहते हैं कि भारत में मौजूदा गर्म हवाओं का एक बड़ा कारण कोयला तथा अन्य जीवाश्म ईंधन का जलाया जाना है और जब तक ग्रीन हाउस गैसों का उत्सर्जन बंद नहीं होगा, तब तक भारत तथा अन्य स्थानों पर हीट वेव और भी गर्म व खतरनाक होती जाएगी। इन घातक स्थितियों से बचने के लिए जलवायु संकट से निपटने के अन्य उपायों के अलावा प्राकृतिक जंगलों के संरक्षण तथा आवासीय इलाकों में भी हरियाली बढ़ाने के लिए वृक्षारोपण अभियान को भी बढ़ावा देना होगा।

- योगेश कुमार गोयल

मोदी मंत्रिमंडल में कैसा बदलाव होगा!

इसे लेकर दो तरह की खबरें हैं। एक खबर है कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी अपनी तीसरी सरकार के दो साल पूरे होने के बाद यानी नौ जून के बाद मंत्रिमंडल में बदलाव करेंगे और वह बड़ा बदलाव होगा। दूसरी खबर है कि बदलाव छोटा मोटा होगा। कहा जा रहा है कि अगले साल होने वाले उत्तर प्रदेश विधानसभा चुनाव को ध्यान में ऱखते हुए कुछ बदलाव किया जाएगा। असल में क्या होगा यह कोई नहीं जानता है। ऐसे मामलों में लोगों को जानकारी तभी मिलेगी, जब ऊपर से बताया जाएगा। अगर नहीं बताना होगा तो पश्चिम बंगाल सरकार जैसा हो जाएगा। वहां जब तक मंत्रियों ने शपथ पढ़नी नहीं शुरू की, तब तक किसी को पता नहीं चला कि कौन कौन शपथ लेगा। भाजपा इस हद तक गोपनीयता रख सकती है क्योंकि फैसला दो लोगों को करना है। सो, बदलाव कैसा होगा इसका अंदाजा किसी को नहीं है। सिर्फ नरेंद्र मोदी और अमित शाह जानते हैं क्या होना है। लेकिन जैसे हालात हैं उन्हें देखते हुए बड़े बदलाव की जरुरत है और सबसे ज्यादा जरुरत कुछ बड़े मंत्रियों को बदलने की है। पिछले सात साल से निर्मला सीतारमण वित्त मंत्री हैं।

अभी जैसी देश की अर्थव्यवस्था है उसे देखते हुए लग नहीं रहा है कि उनके पास कोई नया आइडिया है, जिससे भारत की वित्तीय स्थिति में सुधार हो। एक तरफ रुपया बुरी तरह से गिरता जा रहा है और सरकार से बाहर के आर्थिक जानकार कई तरह के सुझाव दे रहे हैं। परंतु न तो वित्त मंत्री के पास कोई आइडिया दिख रहा है और न रिजर्व बैंक के गवर्नर के पास कोई नई दृष्टि दिख रही है। रुपया गिरने से भारत चौथी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था से फिसल कर छठे स्थान पर पहुंच गया। संस्थागत विदेशी निवेशक यानी एफआईआई और विदेशी पोर्टफोलियो निवेशक यानी एफपीआई भारत के शेयर बाजार से पैसा निकाल रहे हैं। पिछले 11 महीने में उन्होंने साढ़े चार लाख करोड़ रुपए से ज्यादा निकाले हैं। उनका मानना है कि भारत का बाजार बहुत बढ़ाया चढ़ाया गया है। ऊर्जा संकट अलग लोगों का जीवन मुश्किल कर रहा है। वित्त मंत्री ने जिस 'थ्री एफ' की जो बात कही है उसमें एक फर्टिलाइजर है, जिसकी कमी और महंगाई के कारण खाद्य उत्पादन पर असर होगा। ऐसे में एक नए और आर्थिकी के जानकार वित्त मंत्री की जरुरत है। ऐसे ही देश को एक नए और अच्छे शिक्षा मंत्री की जरुरत है। अटल बिहारी वाजपेयी की सरकार में डॉक्टर मुरली मनोहर जोशी शिक्षा मंत्र रहे थे। नरेंद्र मोदी ने स्मृति ईरानी, प्रकाश जावडेकर, रमेश पोखरियाल निशंक और धर्मेंद्र प्रधान को बनाया। आज शिक्षा की हालत सबके सामने है। ध्यान रखें बाकी किसी भी मंत्रालय के मुकाबले शिक्षा ज्यादा जरूरी और विषय की समझ की मांग करने वाला मंत्रालय है। वहां ऐसे मंत्री की जरुरत है, जिसकी शिक्षा के लिए प्रतिबद्धता हो। इसके अलावा दो और मंत्रालय हैं, जहां बदलाव की जरुरत है। इसी तरह विदेश मंत्री को भी बदलने की जरुरत है। ध्यान रहे भारत की विदेश नीति समय की एक निरंतरता रही है और वह समय की कसौटी पर खरा उतरी है। लेकिन पिछले कुछ समय से वह इतनी व्यक्ति केंद्रित हो गई है कि उससे देश की छवि पर नकारात्मक असर हुआ है। इसी तरह केल मंत्रालय को तदर्थ ढंग से नहीं चलाया जा सकता है। वहां ऐसे व्यक्ति को मंत्री बनाया गया है, जिसके पास दो और मंत्रालय हैं। बाकी मंत्रालयों का कामकाज तो जैसे तैसे चल जाता है लेकिन रेल की स्थिति ठीक नहीं है। रेल मंत्रालय की प्राथमिकता अब यात्रियों की सुविधा नहीं रह गई है। ऐसे लग रहा है कि रेल मंत्रालय फैंसी ट्रेन लॉन्च करने के अलावा कुछ खास नहीं कर रहा है। स्वास्थ्य मंत्रालय का हाल भी कोई खास अच्छा नहीं है। लेकिन वित्त, शिक्षा, विदेश और रेल की हालत तो भगवान भरोसे है।

ट्रंप (अमेरिका) अब मजाक हैं!

कोई महाशक्ति कैसे मात्र एक नेता से अपने को गंवा बैठती है, अपनी हैसियत-पहचान का फलूदा बना देती है, इसके इन दिनों ढेरों प्रमाण हैं। अमेरिका ढाई सौ साल का होने वाला है। पर देश अपने उस राष्ट्रपति के 80वें जन्मदिन के तमाशों में है, जिसने छह वर्षों में अमेरिका को फूंका कारतूस बना डाला। अमेरिका और ट्रंप की इस मजबूरी पर सोचें कि वह ईरान को मनाने के लिए पाकिस्तान पर निर्भर है। सभी अब ट्रंप के अमेरिका की हैसियत समझ रहे हैं। इजराइल, इस्लामी देश याकि ईरान, कतर, पाकिस्तान, रूस, चीन सभी की निगाहों में अमेरिका मानों थोथा चना बाजे घना। अमेरिका इतना असहाय पहले कब था जो सैनिक मिशन ईरान को खत्म करने का था और अब उसी से समझौते के लिए ट्रंप मरे जा रहे हैं।

सोचें, ट्रंप ने कितनी बार कहा है कि अमेरिकी सेना ने ईरान का सब कुछ खत्म कर दिया। फिर कितनी बार बोला कि ईरान से समझौता बस होने को है। दो दिन पहले ईरान ने खबर उड़ाई कि समझौता होने के कगार पर। ट्रंप हड़बड़ा गए। जवाब था बकवास है, ईरान ने मसौदा जरूर भेजा है पर मैंने फैसला नहीं किया! उसी दिन फिर ट्रंप ने ईरान के पड़ोसी ओमान को खत्म करने की धमकी दी! इसलिए क्योंकि ईरान-ओमान दोनों होमुर्ज की खाड़ी में टोल वसूली का तानाबाना बुन रहे हैं। ईरान के ऐसे साहस के गहरे अर्थ हैं। इजराइल के प्रधानमंत्री नेतन्याहू ने ट्रंप से ईरान पर हमला करवाया। और अब ट्रंप पाकिस्तान के जनरल मुनीर की कूटनीति के झांसे में हैं। पाकिस्तान ने चालाक लोमड़ी की तरह अरब-खाड़ी देशों के इस्लामी देशों और चीन से अपनी ऐसी पंचायत बनाई है कि पश्चिम एशिया से अमेरिका के आउट होने और उसकी जगह पाकिस्तान की सैन्य उपस्थिति के अवसर बन गए हैं। इस कूटनीति को ईरान के सर्वोच्च नेता मोज्तबा खामेनेई ने भी जाहिर किया है। उन्होंने कहा है कि पश्चिम एशिया की ताकतें अब अमेरिकी सैन्य ठिकानों के लिए ढाल नहीं बनेंगी। इस क्षेत्र में अमेरिका के पास सुरक्षित ठिकाना नहीं रहेगा।

क्या अर्थ है? कतर, बहरीन, सऊदी अरब, ओमान, कुवैत, इराक सभी इस्लामी देश मानने लगे हैं कि अमेरिका न काम का न काज का। इसलिए क्योंकि न वह ईरान के घुटने टिका सका और न उसके मिसाइल, ड्रोन हमलों से इन देशों को बचा सका। उलटे अमेरिकी सैन्य अड्डों के होने से ईरान ने उन पर भी हमला किया। इलाके के मुसलमानों में ईरान का समर्थन दिखा। इसलिए अमेरिकी सैन्य ठिकानों को बनाए रखना जोखिम है न कि सुरक्षा की गारंटी। ऐसे में अरब-खाड़ी के इस्लामी देशों को किसकी जरूरत है? इस्लामी सैन्य महाशक्ति पाकिस्तान की है, व्यापार और कमाई वाले चीन की है। गाजा, लेबनान में इजराइल के तांडव के आगे ईरान की भी है। इस तरह सामरिक, रणनीतिक, कूटनीतिक आदि के कामों में कभी वॉशिंगटन विश्व गुरू था। तभी उसकी वैश्विक चौधराहट थी। विश्व व्यवस्था में स्थिरता थी, संतुलन था। लेकिन सिर्फ और सिर्फ पैसे के लोभी तथा प्रॉपर्टी डीलर की तासीर में रंगे हुए ट्रंप ने, अपने आपको ईसा का अवतार जतलाते हुए अमेरिकियों को ऐसा मूर्ख बनाया जो अमेरिकी दिमाग भी कॉकरोच की दशा की और है। बुद्धि हाशिए में और झूठ का बोलबाला। अमेरिकी रक्षा मंत्रालय, पेंटागन हो या विदेश-वाणिज्य-वित्त संबंधी मंत्रालय और उसके तमाम दिमागी थिंक टैंक सभी की सांसें वैसी ही खोखली हैं, जैसे बारह वर्षों से भारत में है।

सोचें, कभी जी-7 देशों, यूरोपीय नेताओं के साथ अमेरिकी राष्ट्रपति का विचार-विमर्श व साझा था। अब ट्रंप पाकिस्तानी नेताओं, कतर, सऊदी अरब, बहरीन के शेखों, इजराइल के नेतन्याहू या पुतिन, शी जिनपिंग से चोंच लड़ाते हैं। गुजरे सप्ताह गजब हुआ जो नेतन्याहू के प्रभाव में ट्रंप ने मुस्लिम नेताओं से बात की। तुर्किए के राष्ट्रपति एर्दोआन, सउदी अरब, यूएई, मिस्त्र और पाकिस्तान, शेखों, प्रधानमंत्रियों, राष्ट्रपति से बात कर उन्होंने कहा इस्लामी देशों को अब्राहम अकॉर्ड्स मानते हुए इजराइल से कूटनीतिक रिश्ते बना कर दोस्ती करनी चाहिए। तभी शांति होगी। एक तरफ दुनिया का हर मुसलमान गाजा, लेबनान, ईरान में इजराइल-अमेरिका के हमलों के विध्वंस का लाइव साक्षी है वही ट्रंप की ऐसी खामोख्याली। पाकिस्तान ने ट्रंप को तुरंत हैसियत दिखाई। उसके रक्षा मंत्री याकि जनरल मुनीर के बॉस ख्वाजा आसिफ ने कहा पाकिस्तान अपनी मौलिक विचारधाराओं से कतई समझौता नहीं कर सकता। 'हम उन लोगों के साथ कैसे बैठ सकते हैं, जिनकी बात पर एक दिन के लिए भी भरोसा नहीं किया जा सकता'। बावजूद इसके वही ट्रंप प्रशासन उम्मीद में है कि पाकिस्तान जैसे-तैसे ईरान से सौदा पटाए। ऐसे अमेरिका की क्या कभी किसी ने कल्पना की?

-हरिशंकर व्यास

भारत का बड़ा ऐलानः वियतनाम के साथ ब्रह्मोस डील फाइनल, इंडोनेशिया से भी बातचीत अंतिम दौर में

एजेंसी सिंगापुर

भारत ने वियतनाम को ब्रह्मोस मिसाइल बेचने का सौदा पक्का कर लिया है। यह घोषणा दोनों देशों के नेताओं के करीबी आर्थिक संबंध बनाने का संकल्प लेने के कुछ हफ्तों बाद की गई है। सिंगापुर में आयोजित शांगरी-ला डायलॉग में भारतीय रक्षा सचिव राजेश कुमार ने कहा कि वियतनाम के साथ ब्रह्मोस रक्षा सौदा हो गया है। उन्होंने यह भी कहा कि इंडोनेशिया के साथ ब्रह्मोस मिसाइल को लेकर बातचीत अंतिम चरण में है।

रक्षा सचिव राजेश कुमार ने यह भी खुलासा किया कि दक्षिण-पूर्व एशिया के एक और प्रमुख देश इंडोनेशिया के साथ भी ब्रह्मोस मिसाइल बेचने का सौदा अपने अंतिम चरण में है। जल्द ही इस पर भी मुहर लग सकती है। इंडोनेशिया इस मिसाइल को खरीदने वाला तीसरा देश बन सकता है। हालांकि, डील की कुछ शर्तों और कीमत को लेकर अभी भी बातचीत हो रही है।

भारत और वियतनाम के बीच ब्रह्मोस मिसाइल को लेकर लंबे समय से बातचीत चल रही थी। हाल ही में वियतनाम के राष्ट्रपति तो लाम की भारत यात्रा के दौरान इस पर गहन चर्चा हुई थी, जिसके बाद अब इसे अंतिम रूप दे दिया गया है। हालांकि, वियतनाम को लेकर इस डील पर अभी तक आधिकारिक प्रतिक्रिया नहीं दी गई है। वियतनाम ने कई बार भारत की ब्रह्मोस मिसाइल को खरीदने की अपनी इच्छा को सार्वजनिक रूप से व्यक्त भी किया है।

एशिया टाइम्स की रिपोर्ट के अनुसार भारत-वियतनाम ब्रह्मोस मिसाइल सौदा लगभग 60 अरब रुपये (लगभग 629 से 700 मिलियन डॉलर) का बताया जा रहा है। इस पैकेज में तटीय रक्षाके लिए मोबाइल बैटरियां, मिसाइलों का पहला बैच, लॉजिस्टिक्स और वियतनामी सैनिकों की ट्रेनिंग शामिल है। इसके अलावा भविष्य में इस डील को जरूरत के हिसाब से और ज्यादा बढ़ाया जा सकता है।

वियतनाम ब्रह्मोस मिसाइल खरीदने वाला दुनिया का दूसरा देश है। ब्रह्मोस को खरीदने वाला पहला देश फिलीपींस है। यह मिसाइल फिलिपींस में तैनात भी की जा चुकी है, जिसका हाल में ही सिमुलेशन फायर टेस्ट भी किया गया था। फिलिपींस ने 2022 में भारत से $375 मिलियन की ब्रह्मोस डील की थी, जिसकी डिलीवरी दी जा चुकी है।

रूस की तस्वीर ने हिलाई दुनिया, रातों-रात पलटी भारत की किस्मत

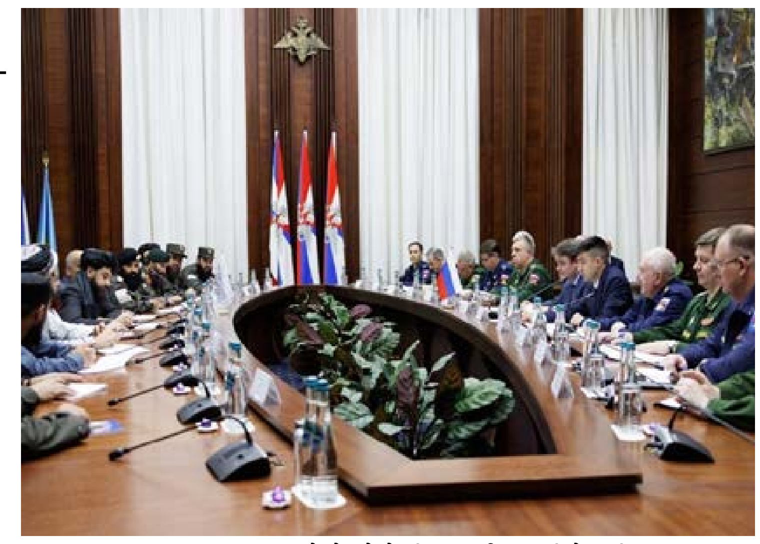

एजेंसी तेल अवीव

भारत के नेशनल सिक्योरिटी एडवाइजर अजीत डोभाल रूस के दौरे पर हैं। अजीत डोभाल ने रूस के नेशनल सिक्योरिटी एडवाइजर सरगेई शोइगू से मुलाकात की। पहलगाम हमले का जिक्र करते हुए पाकिस्तान को खूब धोया। शुरुआत में सबको लगा कि यह एक नॉर्मल रूटीन मीटिंग है। लेकिन इस मीटिंग के बाद जो हुआ उसकी कल्पना ना तो अमेरिका को थी और ना ही पाकिस्तान को। अजीत डोभाल से मिलने के बाद रूस के एनएसए सरगई शोइगू ने अफगानिस्तान के रक्षा मंत्री मौलवी मोहम्मद याकूब को अपने पास बुला लिया। रूसी एनएसए और अफगानिस्तान के रक्षा मंत्री ने मिलकर एक फाइल पर साइन कर दिया। असली खबर यह है कि रूस ने अफगानिस्तान के साथ एक बहुत बड़ी डिफेंस डील साइन कर ली है। वो भी अजीत डोभाल से मिलने के बाद। इस बड़ी डिफेंस डील के तहत रूस अफगानिस्तान की तालिबान सरकार को खतरनाक हथियार देगा। मॉडर्न एयर डिफेंस सिस्टम देगा। इन हथियारों को चलाने के लिए टेक्निकल ट्रेनिंग भी देगा। यानी पाकिस्तान से जंग लड़ रहे तालिबान के पास अब रूसी हथियारों की अनलिमिटेड सप्लाई रहेगी। यह बताने की जरूरत नहीं है कि अफगानिस्तान का तालिबान इन हथियारों का इस्तेमाल किस देश पर करेगा। इस डील के बाद पाकिस्तान में भयंकर भूचाल आ गया है। पाकिस्तान ने अचानक अमेरिका के विदेश मंत्री मार्को रूबियो से मुलाकात की है। याद दिला दें कि कुछ महीनों पहले पाकिस्तान ने अफगानिस्तान पर एक भयंकर एयर स्ट्राइक की थी। यह एयर स्ट्राइक एक हॉस्पिटल पर की गई थी जिसमें 400 मरीजों की मौत हो गई थी। उस समय अफगानिस्तान ने पाकिस्तान से कहा था कि थोड़ा इंतजार करो। हमारा पलटवार और भी तगड़ा होगा। अब अफगानिस्तान रूसी हथियारों से पाकिस्तान पर पलटवार करेगा। पाकिस्तानी एयर स्ट्राइक्स को रोकने के लिए रूसी एयर डिफेंस सिस्टम का इस्तेमाल करेगा। इस खबर के आते ही पाकिस्तान के पत्रकार, रिटायर्ड फौजियों और डिप्लोमेट्स ने रूस को गालियां देनी शुरू कर दी हैं। यह सभी बोल रहे हैं कि रूस पाकिस्तान से कभी दोस्ती नहीं कर सकता। रूस तो भारत का दोस्त है। पुतिन ने अफगानिस्तान के साथ डील करके पीएम मोदी की मदद की है। लगभग यही हाल अमेरिका का भी है। अमेरिकी बोल रहे हैं कि रूस इतनी स्ट्रेटेजिक लोकेशन में घुस गया है। तालिबान के साथ डिफेंस डील कर ली है। अफगानिस्तान पर तो हमारा राज होना चाहिए था। बहरहाल अमेरिका और पाकिस्तान यह नहीं जानते कि रूस में डोबाल बैठे हैं। पिछले कुछ महीनों में अजीत डोबाल कई बार रूस से मिल चुके हैं। हाल ही में भारत के दौरे पर आए रूस के फर्स्ट डेपुटी प्राइम मिनिस्टर डेनिस मॉनटुरोव तो अजीत डोबाल से मिलने उनके ऑफिस तक पहुंच गए थे। यह सारी मीटिंग्स मौज मस्ती के लिए नहीं थी। इनका जो मकसद था वो अब दुनिया को पता चला है। पाकिस्तान की नस नस को जानने वाले अजीत डोभाल के सामने ही रूस ने अफगानिस्तान के साथ ऐतिहासिक डिफेंस डील कर ली है।

इबोला के नए स्ट्रेन से कोहराम, 30 से 50 प्रतिशत लोगों की हो रही मौत, WHO भी परेशान

एजेंसी जिनेवा

विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) ने कहा है कि डेमोक्रेटिक रिपब्लिक ऑफ कांगो (DRC) में इबोला के 906 संदिग्ध मामले सामने आए हैं। इनमें 223 संदिग्ध मौतें भी शामिल हैं जिनकी जांच की जा रही है। डब्लूएचओ ने कहा है कि इस नए स्ट्रेन के कारण 30 से 50 प्रतिशत लोगों की मौतें हो रही हैं। डेमोक्रेटिक रिपब्लिक ऑफ कांगो में इबोला के बुंडिबुग्यो स्ट्रेन का प्रकोप जारी है। युगांडा में भी इस स्ट्रेन के मामले सामने आए हैं। डीआरसी ने इबोला के 125 मामलों की पुष्टि की है। इनमें इटुरी, नॉर्थ किवु और साउथ किवु में 17 मौतें शामिल हैं। हालांकि, WHO ने कहा कि अभी तक इस संक्रमण के कम्युनिटी ट्रांसमिशन का कोई मामला सामने नहीं आया है। विश्व स्वास्थ्य संगठन ने मई की शुरुआत में कहा था कि पूर्वी डेमोक्रेटिक रिपब्लिक ऑफ कांगो में इबोला का यह प्रकोप दो महीने पहले शुरू हुआ था। इबोला के इस दुर्लभ बुंडिबुग्यो स्ट्रेन के प्रकोप को WHO ने 'अंतरराष्ट्रीय चिंता का सार्वजनिक स्वास्थ्य आपातकाल' घोषित किया है। अभी तक इबोला के इस स्ट्रेन के लिए कोई टीका उपलब्ध नहीं है। विशेषज्ञों के लिए यह चिंता का विषय इसलिए बन गया है क्योंकि यह एक घनी आबादी वाले इलाके में फैलने के बावजूद लंबे समय तक पकड़ में नहीं आया, जिससे संक्रमित लोगों के संपर्क में आए व्यक्तियों का पता लगाना और उन्हें अलग करना मुश्किल हो गया है।

WHO के स्वास्थ्य आपातकाल कार्यक्रम का हिस्सा, 'हाई थ्रेट पैथोजन्स टीम' की एनाइस लेगैंड ने बताया कि जिन लोगों में संक्रमण की पुष्टि हुई है, उनमें से मरने वालों की दर 30% से 50% के बीच है। लेगैंड ने कहा, "यह बहुत बड़ी संख्या है। इसका मतलब है कि हर 10 में से पांच लोगों की मौत होने की आशंका है।" उन्होंने यह भी जोड़ा कि ये आंकड़े शुरुआती हैं और इनकी आगे और जांच किए जाने की आवश्यकता है। लेगैंड ने कहा कि शुरुआती देखभाल मिलने से मृत्यु दर को कम करने में मदद मिल सकती है। लेगैंड ने बताया कि ठीक होने वाले पहले मरीज को DRC के एक स्वास्थ्य केंद्र से छुट्टी दे दी गई है, जिसके दो टेस्ट नेगेटिव आए थे। उन्होंने उम्मीद जताई कि और भी कई लोग ठीक होंगे, और साथ ही शुरुआती देखभाल तक पहुंच के महत्व पर भी जोर दिया। WHO ने कहा कि जांच (टेस्टिंग) की क्षमता को बढ़ाया जा रहा है, और उसे उम्मीद है कि संदिग्ध मामलों से लिए गए टेस्ट के नमूनों का जो बैकलॉग (बकाया) जमा हो गया है, उसे आने वाले कुछ दिनों में निपटा दिया जाएगा। लेगैंड ने कहा कि संदिग्ध मामलों की संख्या बढ़ने की संभावना है, लेकिन उन्होंने यह भी जोड़ा कि यह इस बात का संकेत है कि निगरानी व्यवस्था ठीक से काम कर रही है।

राफेल vs सुखोई Su-30SM: आमने-सामने आए दो 'आसमानी दिग्गज', बाल-बाल बची मुठभेड़

एजेंसी पेरिस

रोमानिया पर ड्रोन हमले के बाद रूस और नाटो के बीच तनाव चरम पर है। इस बीच फ्रांस ने दावा किया है कि उसके राफेल लड़ाकू विमानों ने दो रूसी सुखोई Su-30SM लड़ाकू विमानों को खदेड़ दिया है। बताया गया कि ये रूसी लड़ाकू विमान नाटो देशों की सीमा का उल्लंघन करने वाले थे। ये बिना किसी उड़ान योजना के बाल्टिक हवाई क्षेत्र में घुस आए थे। इससे पहले ही राफेल लड़ाकू विमानों ने उन दोनों सुखोई Su-30SM लड़ाकू विमानों को खदेड़ दिया। इन राफेल विमानों ने लिथुआनिया के शियाउलियाई एयर बेस से उड़ान भरी थी। फ्रांस के सशस्त्र बलों के जनरल स्टाफ ने इस कार्रवाई का फुटेज जारी किया और पुष्टि की कि यह अलर्ट बहुत कम समय के नोटिस पर जारी किया गया था। फ्रांसीसी सेना के आधिकारिक पोस्ट में बताया गया कि ये विमान बिना अनुमति के बाल्टिक देशों के हवाई क्षेत्र में घुस आए थे, जिसके बाद राफेल विमान उन्हें बाहर निकालने के लिए शियाउलियाई से रवाना हुए। राफेल को आता देख रूसी लड़ाकू विमान पीछे लौट गए। इस दौरान किसी भी तरह का कोई डॉगफाइट नहीं हुआ था।

Su-30SM रूस में बना चौथी पीढ़ी का मल्टीरोल लड़ाकू विमान है। यह उसी प्रकार का विमान है जिसे फ्रांस के राफेल विमान 31 मार्च, 2026 को स्पेन से NATO के बाल्टिक हवाई निगरानी मिशन की कमान संभालने के बाद से लगातार ट्रैक कर रहे हैं। अप्रैल में, फ्रांसीसी सेना ने एक ही सप्ताह में चार बार आपातकालीन उड़ानें भरीं, और छह रूसी सैन्य विमानों की पहचान कर उन्हें बाहर तक एस्कॉर्ट किया; इनमें एक Su-30SM और एक Il-20M इलेक्ट्रॉनिक खुफिया विमान शामिल था।

नाटो ने लिथुआनिया में रूसी सीमा से लगभग 130 किमी दूर शियाउलियाई में एक बड़ा एयरबेस बनाया है। इसे 2004 में शुरू कुया गया था। इसके बाद से यह एयरबेस बाल्टिक देशों के लिए NATO के प्राथमिक हवाई निगरानी केंद्र के रूप में कार्य कर रहा है। इस बेस पर सहयोगी देशों के लड़ाकू विमानों की टुकड़ियां लगभग चार महीने के रोटेशन पर तैनात रहती हैं और इनमें से प्रत्येक टुकड़ी तीनों बाल्टिक देशों की निरंतर हवाई सुरक्षा के लिए जिम्मेदार होती है। फ्रांस ने वर्तमान रोटेशन की अगुवाई करने के लिए चार राफेल B लड़ाकू विमान और 100 से अधिक सैन्य कर्मियों को तैनात किया है, जिसमें रोमानिया भी बराबर रूप से अपना योगदान दे रहा है।

चीन-पाकिस्तान की जुगलबंदी के बीच दो मोर्चों पर निपटने की तैयारी ? भारतीय नौसेना प्रमुख ने क्या बताया

एजेंसी नई दिल्ली

नौसेना प्रमुख एडमिरल दिनेश के. त्रिपाठी ने कहा कि हिंद महासागर क्षेत्र में चीन और पाकिस्तान की ओर से किसी भी 'दो-तरफा' खतरे से निपटने के लिए भारतीय नौसेना ने अपनी पनडुब्बी-रोधी युद्ध क्षमता, पानी के भीतर निगरानी और नेटवर्क-आधारित अभियानों को काफी मजबूती प्रदान की है। एडमिरल त्रिपाठी ने 'पीटीआई-भाषा' को बताया कि नौसेना की ये कोशिशें किसी खास देश के खिलाफ नहीं हैं, बल्कि इनका उद्देश्य भारत के समुद्री हितों की पूर्ण सुरक्षा सुनिश्चित करना है। एडमिरल की यह टिप्पणी हिंद महासागर में चीन की बढ़ती मौजूदगी और पाकिस्तान के साथ उसके बढ़ते समुद्री तालमेल के बीच आई है। उन्होंने कहा कि हम इस बात से पूरी तरह अवगत हैं कि हिंद महासागर क्षेत्र बढ़ती रणनीतिक प्रतिस्पर्धा और क्षेत्र के बाहर की ताकतों की अधिक मौजूदगी का गवाह बन रहा है। यह हमें 'सहयोग के युग' से निकालकर 'तीव्र प्रतिस्पर्धा के युग' की ओर ले जा रहा है'। उन्होंने कहा 'एक पेशेवर समुद्री बल के रूप में, भारतीय नौसेना क्षेत्रीय स्तर पर होने वाले सभी घटनाक्रमों पर बहुत बारीकी से नजर रखती है, और हमारा दृष्टिकोण पूरी तरह से क्षमताओं पर आधारित और खतरों की सूचनाओं पर केंद्रित बना हुआ है। हाल के समय में समुद्री क्षेत्र में पाकिस्तान और चीन के बीच सहयोग बढ़ा है। पिछले महीने ही पाकिस्तान की नौसेना के लिए चीन द्वारा बनाई गईं चार डीजल-इलेक्ट्रिक हमला पनडुब्बियों में से पहली को शामिल करने की दोनों पक्षों ने घोषणा की थी। पाकिस्तानी नौसेना के आधुनिकीकरण में चीन बड़ी भूमिका निभा रहा है। एडमिरल त्रिपाठी ने कहा कि नौसेना लगातार बदलती रणनीतिक परिस्थितियों का आकलन करती है और उसी के अनुसार अपने ढांचे, अभियान के तरीकों और तैयारियों के स्तर को बदलती रहती है। उन्होंने आगे कहा कि हमारे प्रयास किसी एक देश विशेष को ध्यान में रखकर नहीं किये जा रहे, बल्कि भारत के समुद्री हितों की पूरी सुरक्षा और एक स्थिर, मुक्त, खुले और समावेशी हिंद-प्रशांत क्षेत्र में योगदान सुनिश्चित करना है। नौसेना प्रमुख ने कहा कि किसी जटिल या दो-तरफा चुनौती का हमारा जवाब भरोसेमंद सैन्य क्षमता है। नौसेना प्रमुख ने कहा कि मुझे अपनी मौजूदा युद्धक क्षमताओं और हमारी वर्तमान क्षमता विस्तार योजनाओं पर अत्यंत भरोसा है, जिसमें 'पी 75 (आई)' पनडुब्बी कार्यक्रम और नौसेना के बेड़े में 200 से अधिक जहाज जोड़ना शामिल है। रक्षा क्षेत्र में 'आत्मनिर्भरता' की सरकार की नीति के महत्व को रेखांकित करते हुए एडमिरल त्रिपाठी ने कहा कि आत्मनिर्भरता रणनीतिक स्वायत्तता, तकनीकी जुझारूपन और भविष्य की युद्ध क्षमताओं के लिए बुनियाद है। उन्होंने कहा कि सबसे बड़ा बदलाव यह है कि अब हम 'खरीदने वाली नौसेना' से 'बनाने वाली नौसेना' बन गए हैं। उन्होंने आगे कहा कि आज हमारे निर्माणाधीन सभी 45 जहाज विशेष रूप से भारतीय गोदियों में बनाए जा रहे हैं।

नेपाल की 'बालेन डॉक्ट्रिन': भारत और चीन के सामने झुकने से इनकार, क्या अलग-थलग पड़ेगा काठमांडू

एजेंसी काठमांडू

नेपाल के प्रधानमंत्री बालेंद्र शाह खुद को वैश्विक कूटनीति से दूर रखने की कोशिश कर रहे हैं। उन्होंने पिछले कुछ दिनों में भारत, अमेरिका और ब्रिटेन के शीर्ष राजनयिकों से दूरी बनाई है। उन्होंने एक साल तक विदेश यात्रा न करने का भी ऐलान किया है। उन्होंने अपने देश को भारत, चीन और अमेरिका के बीच खींचतान का अड्डा नहीं बनाने की बात भी की है। हालांकि, नेपाल के ताजा हालात ऐसे नहीं हैं कि वह वैश्विक अलगाव का सामना कर सके। ऐसे में सवाल उठ रहा है कि बालेंद्र शाह आखिर किस तरह की विदेश नीति चला रहे हैं और क्या इससे नेपाल के अलग-थलग पड़ने का खतरा तो पैदा नहीं हो जाएगा। अंतरराष्ट्रीय दूतों से मिलने में अपनी मशहूर अनिच्छा से हटते हुए, प्रधानमंत्री बालेन्द्र शाह ने मंगलवार को यूरोपीय संघ (EU) और दूसरे देशों के राजदूतों और राजनयिकों के एक प्रतिनिधिमंडल से सामूहिक रूप से मुलाकात की। उनकी एकांतप्रियता को देखते हुए, मेहमानों को सम्मानित और भाग्यशाली महसूस कराया गया। हालांकि कुछ राजनयिकों ने निजी तौर पर कहा कि वे इस मुलाकात से ज्यादा प्रभावित नहीं हुए, जिसमें प्रधानमंत्री बालेंद्र शाह ने सिर्फ चार मिनट बात की। माना जा रहा है कि इस मुलाकात का मकसद लोगों को यह दिखाना था कि अंतरराष्ट्रीय समुदाय नेपाल के इस रहस्यमयी नेता को सम्मान दे रहा हो। बालेंद्र शाह ने किन राजनयिकों से मिलने से किया है इनकार इससे पहले उन्होंने दक्षिण और मध्य एशिया के प्रभारी अमेरिकी राष्ट्रपति के विशेष दूत सर्जियो गोर, साथ ही भारतीय विदेश सचिव विक्रम मिसरी और इंडो-पैसिफिक मामलों की ब्रिटिश मंत्री सीमा मल्होत्रा से मिलने से इनकार कर दिया था। इस पर भारी बवाल भी हुआ था और नेपाल के प्रधानमंत्री बालेंद्र शाह की विदेश नीति पर सवाल भी उठे थे। यहां तक कहा गया कि नेपाल के कई वरिष्ठ नेताओं और अधिकारियों ने बालेंद्र शाह को विदेशी शीर्ष राजनयिकों से मिलने के लिए मनाने की कोशिश की, लेकिन वे सभी नाकाम रहे। मंगलवार को मुलाकात के बाद प्रेस से बात करते हुए, यूरोपीय संघ के राजदूतों ने कहा कि वे सभी प्रधानमंत्री से "मिलने का मौका पाकर बहुत सम्मानित महसूस कर रहे हैं।" स्वीडिश राजदूत जान थेस्लेफ़ ने कूटनीतिक अंदाज में कहाः "हमारी दो घंटे की बैठक हुई, जो विदेशी राजनयिकों के साथ इस तरह की पहली बैठकों में से एक थी, और यह काफी दिलचस्प रही। हमारे लिए, जो पूरे EU का प्रतिनिधित्व करते हैं, यह बैठक हमारे आपसी संबंधों में विश्वास का प्रतीक थी, जिसे हम और मज़बूत बनाना चाहते हैं।" लेकिन वहां मौजूद अन्य सूत्रों ने हमें बताया कि प्रधानमंत्री ने नेपाल की नई विदेश नीति की रणनीति को सामने रखने के इस मौके का फायदा नहीं उठाया। सरकार ने कहा है कि नेपाल अब सिर्फ एक 'बफर स्टेट' (दो बड़े देशों के बीच फंसा हुआ देश) बनकर नहीं रहना चाहता, बल्कि एक जीवंत और प्रगतिशील राष्ट्र के तौर पर अपनी एक नई पहचान बनाना चाहता है। उनका इशारा भारत और चीन के बीच नेपाल की भौगोलिक स्थिति की ओर भी था। उन्होंने नेपाल की स्वतंत्र और बहुमुखी विदेश नीति की ओर भी इशारा किया। दरअसल, बालेंद्र शाह जिस विदेश नीति की पैरवी कर रहे हैं उन्हें आम बोलचाल की भाषा में बालेन डॉक्ट्रिन कहा जा रहा है। प्रधानमंत्री बालेंद्र शाह का कहना है कि वे सिर्फ अपने ही दर्जे के विदेशी नेताओं से आमने-सामने ही मिलेंगे। इसी कारण उन्होंने दूसरे देशों के शीर्ष राजनयिकों से मुलाकात की है। उनका यह फैसला उनके घरेलू समर्थकों को तो काफी पसंद आया है, लेकिन इससे लंबे समय में नुकसन हो सकता है। विशेषज्ञों का कहना है कि इस तरह का अलग-थलग रहने वाला प्रोटोकॉल एशिया के सबसे गरीब देशों में से एक के लिए नुकसानदेह साबित हो सकता है।

आईपीएल का फाइनल मैच आज

एजेंसी नई दिल्ली

इंडियन प्रीमियर लीग 2026 का फाइनल मुकाबला 31 मई यानी रविवार को अहमदाबाद के नरेंद्र मोदी स्टेडियम में रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु और गुजरात टाइटंस के बीच खेला जाएगा। आरसीबी क्वालीफायर-1 में गुजरात टाइटंस को हराकर ही फाइनल में पहुंची थी। इसके बाद क्वालीफायर-2 में गुजरात ने राजस्थान रॉयल्स को रौंदा और फाइनल में अपनी जगह बना ली। फाइनल मुकाबला शुरू होने में 24 घंटे से भी कम का समय बाकी है। लेकिन अब तक शुभमन गिल की कप्तानी वाली गुजरात टाइटंस अहमदाबाद नहीं पहुंची है। ईएसपीएनक्रिकइंफो के मुताबिक, तूफानी मौसम की वजह से अब तक गुजरात की टीम अहमदाबाद नहीं पहुंच पाई है।

रिपोर्ट के मुताबिक, गुजरात चंडीगढ़ से शनिवार की दोपहर में चार्टर फ्लाइट से निकलने वाली थी। लेकिन नॉर्थ वेस्टर्न में बारिश की वजह से कई फ्लाइट डिले हो गईं। एयरपोर्ट अथॉरिटी को टेक ऑफ की क्लियरेंस नहीं मिली थी। ऐसे में गुजरात टाइटंस आज यानी 30 मई को 10 बजे के बाद ही अहमदाबाद में लैंड करेगी। बता दें कि ऐसा पहली बार हो रहा है जब फाइनल के एक दिन पहले कोई टीम ट्रेवल कर रही है।

रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरुः वेंकटेश अय्यर, विराट कोहली, देवदत्त पडिक्कल, रजत पाटीदार (कप्तान), जितेश शर्मा (विकेटकीपर), टिम डेविड, क्रुणाल पंड्या, भुवनेश्वर कुमार, जैकब डफी, जोश हेजलवुड, रसिख सलाम डार, रोमारियो शेफर्ड, सुयश शर्मा, कनिष्क चौहान, अभिनंदन सिंह, जॉर्डन कॉक्स, फिलिप साल्ट, रिचर्ड ग्लीसन, स्वप्निल सिंह, विक्की ओस्तवाल, विहान मल्होत्रा, मंगेश यादव, सात्विक देसवाल।

गुजरात टाइटंसः साई सुदर्शन, शुभमन गिल (कप्तान), जोस बटलर (विकेटकीपर), वाशिंगटन सुंदर, राहुल तेवतिया, निशांत सिंधु, जेसन होल्डर, राशिद खान, आर साई किशोर, कगिसो रबाडा, प्रसिद्ध कृष्णा, मोहम्मद सिराज, ग्लेन फिलिप्स, अनुज रावत, कुमार कुशाग्र, अरशद खान, ल्यूक वुड, कॉनर एस्टरहुइजन, इशांत शर्मा, जयंत यादव, शाहरुख खान, कुलवंत खेजरोलिया, मानव सुथार, गुरनूर बरार, अशोक शर्मा।

आखिरी मैच में 2-3 से हारी भारतीय टीम, रोमांचक हॉकी टीम 2-2 से बराबर

एजेंसी नई दिल्ली

भारतीय महिला हॉकी टीम चार मैचों की दोस्ताना श्रृंखला के आखिरी मैच में आस्ट्रेलिया से 2 . 3 से हार गई जिससे श्रृंखला 2 . 2 से बराबरी पर खत्म हो गई। भारत ने दूसरे मिनट में पेनल्टी कॉर्नर पर नवनीत कौर के गोल के दम पर बढत बना ली थी। दूसरे क्वार्टर में दीपिका सोरेंग ने 23वें मिनट में गोल करके भारत की बढत दुगुनी कर दी। हाफटाइम तक स्कोर 2 . 0 था। आस्ट्रेलिया ने तीसरे क्वार्टर में एबी विल्सन (42वां) और ओलिविया डोनेस (44वां) के गोल के दम पर वापसी की। कर्टनी शोनेल ने 58वें मिनट में गोल करके आस्ट्रेलिया को 3 . 2 से जीत दिलाई। इस हार के बावजूद यह दौरा भारत के लिये अच्छा रहा।

पहला मैच हारने के बाद भारत ने दो मैच जीतकर वापसी की। न्यूजीलैंड में 15 से 21 जून तक होने वाले एफआईएच नेशंस कप से पहले भारतीय टीम ने जबर्दस्त दृढता, अनुशासन और जुझारूपन दिखाते हुए अपनी तैयारी पुख्ता की। पहले मैच में आस्ट्रेलिया ने 2 . 1 से जीत दर्ज की थी लेकिन भारत ने दूसरा मैच शूटआउट में 4 . 2 से जीता।

तीसरे मैच में भारतीय टीम ने 2 . 1 से जीत दर्ज की। इस दौरे पर भारत ने हर विभाग में प्रभावित किया और डिफेंस तथा मिडफील्ड में प्रदर्शन में काफी सुधार देखने को मिला। नेशंस कप के जरिये भारत के पास 2026 . 27 सत्र के लिये एफआईएच प्रो लीग में वापसी का भी मौका है जो लॉस एंजिलिस ओलंपिक 2028 का क्वालीफायर भी है।

विनेश फोगाट एशियाई खेल ट्रायल में दोहरी जीत, भारतीय टीम में दावेदारी मज़बूत

एजेंसी नई दिल्ली

अनुभवी पहलवान और ओलंपियन विनेश फोगाट ने शनिवार को इंदिरा गांधी स्टेडियम में निशु को हराकर एशियाई खेल 2026 चयन ट्रायल में अपनी दूसरी जीत हासिल की। इससे पहले उन्होंने अपने पहले मैच में हरियाणा की ज्योति को 7-1 के स्कोर से हराया था। इन लगातार जीतों के साथ, फोगाट आगामी एशियाई खेलों के लिए भारतीय कुश्ती टीम में जगह बनाने की अपनी दावेदारी को मजबूत कर रही हैं। उनका लगातार अच्छा प्रदर्शन उनके अनुभव और कौशल को दर्शाता है, जिससे वह अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिता के लिए एक प्रमुख दावेदार के रूप में उभर रही हैं। भारतीय कुश्ती महासंघ (डब्ल्यूएफआई) ने शनिवार को पुष्टि की कि फोगाट चयन ट्रायल में 53 किलोग्राम वर्ग में भाग ले रही हैं। डब्ल्यूएफआई ने बताया कि महिला 53 किलोग्राम वर्ग सहित सभी भार वर्गों के लिए वजन मापन नई दिल्ली के इंदिरा गांधी स्टेडियम में एशियाई खेलों के चयन ट्रायल के स्वीकृत कार्यक्रम के अनुसार किया गया। विनेश फोगाट सहित सभी योग्य पहलवान वजन मापन के लिए उपस्थित हुए और आवश्यक औपचारिकताएं पूरी कीं।

बयान में आगे कहा गया कि तदनुसार, निर्धारित आवश्यकताओं को पूरा करने वाले सभी योग्य पहलवानों को चयन ट्रायल में भाग लेने की अनुमति दे दी गई है, जो शीघ्र ही शुरू होने वाले हैं। फोगाट का वजन 53.9 किलोग्राम था और उन्हें 53 किलोग्राम वर्ग में शामिल किया गया। हरियाणा की यह पहलवान और जुलाना की विधायक ट्रायल्स में मीनाक्षी गोयत और अंतिम पंघाल के खिलाफ प्रतिस्पर्धा करेंगी। इस प्रतियोगिता का विजेता इस साल के अंत में होने वाली महाद्वीपीय प्रतियोगिता में भारत का प्रतिनिधित्व करेगा। दिल्ली उच्च न्यायालय के निर्देशानुसार, भारतीय ओलंपिक संघ (आईओए) और भारतीय खेल प्राधिकरण (एसएआई) की पर्यवेक्षक अदिति चौहान और एम.एम. सोमैया इंदिरा गांधी स्टेडियम में चल रहे ट्रायल्स में उपस्थित हैं। डब्ल्यूएफआई अध्यक्ष संजय सिंह भी उपस्थित हैं। शुक्रवार को सुप्रीम कोर्ट ने फोगाट को अंतरिम राहत प्रदान की और डब्ल्यूएफआई द्वारा दायर उस याचिका पर उनकी प्रतिक्रिया मांगी जिसमें मुकदमों में उनकी भागीदारी को चुनौती दी गई है। मामले की आगे की सुनवाई सोमवार, 1 जून को होनी है।

मैं भारत के सिलेक्शन के लिए नहीं देख रहा हूं, IPL फाइनल से पहले रजत पाटीदार का यह कैसा बयान

एजेंसी नई दिल्ली

इंडियन प्रीमियर लीग 2026 का फाइनल मुकाबला रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु और गुजरात टाइटंस के बीच अहमदाबाद के नरेंद्र मोदी स्टेडियम में खेला गया। इस खिताबी मुकाबले से पहले आरसीबी के कप्तान रजत पाटीदार ने प्रेस कॉन्फ्रेंस ली। पाटीदार ने प्रेस कॉन्फ्रेंस में भारतीय टीम में अपने सिलेक्शन को लेकर बड़ा बयान दिया है। आरसीबी के कप्तान रजत पाटीदार ने कहा, ' मैं भारतीय टीम में अपने सिलेक्शन को लेकर बिल्कुल भी नहीं देख रहा हूं।' बता दें कि रजत पाटीदार भारत के लिए टेस्ट और वनडे में डेब्यू कर चुके हैं। उन्होंने तीन टेस्ट और एक वनडे भारत के लिए खेला है। रजत पाटीदार महान महेंद्र सिंह धोनी और रोहित शर्मा की तरह आईपीएल खिताब का बचाव करने वाले कप्तानों की सूची में शामिल होने से बस एक कदम दूर हैं, लेकिन रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु (आरसीबी) के कप्तान किसी और की नकल करने के बजाय एक नेतृत्वकर्ता के रूप में अपना अलग रास्ता बनाना चाहते हैं।

पाटीदार ने 2025 में आरसीबी को उनका पहला आईपीएल खिताब दिलाया था, और अब उन्हें लगातार दूसरा खिताब जीतने के लिए रविवार को यहां गुजरात टाइटंस को हराना होगा। धोनी और रोहित शर्मा की तरह खिताब बचाने की उपलब्धि के करीब पहुंचने पर पूछे गए सवाल पर पाटीदार ने कहा कि उनका ध्यान तुलना पर नहीं, बल्कि अपने खेल और टीम के प्रदर्शन पर है।

हर कप्तान ट्रॉफी जीतना चाहता है- रजत पाटीदार

उन्होंने कहा, 'हर कप्तान ट्रॉफी जीतना चाहता है, लेकिन मैं खुद को नहीं बदलता। मैं जैसा हूं, वैसा ही रहना महत्वपूर्ण है। मैंने कभी यह नहीं सोचा कि किसी दूसरे कप्तान ने क्या किया है और मुझे उनकी बराबरी करनी है या नहीं।' पाटीदार ने कहा कि उनका क्रिकेट सफर उतार-चढ़ाव भरा रहा है और वह हमेशा वर्तमान पर ध्यान केंद्रित रखते हैं। उन्होंने कहा, 'मैं आगे या पीछे के बारे में नहीं सोचता। मेरा पूरा ध्यान इस समय फाइनल पर है और हम अपना सर्वश्रेष्ठ देने की कोशिश करेंगे।'

व्यापार

सीतारमण ने कहा- डर फैलाने वाली बातों की गुंजाइश नहीं, अहलूवालिया का जवाब, हकीकत का सामना करते हैं

एजेंसी नई दिल्ली

योजना आयोग के पूर्व उपाध्यक्ष मोंटेक सिंह अहलूवालिया ने सुझाव दिया है कि केंद्र सरकार को आलोचनाओं पर ध्यान देना चाहिए। उन आर्थिक समस्याओं को स्वीकार करना चाहिए जिनमें सुधार की जरूरत है। लेकिन, साथ ही उन्होंने यह भी कहा कि सभी आलोचक समझदार नहीं होते। पश्चिम एशिया संकट के कारण तेल की कीमतें बढ़ गई हैं। रुपया कमजोर हुआ है। देश के राजकोषीय घाटे पर दबाव बढ़ा है। सुरजीत भल्ला और अरविंद सुब्रमण्यम सहित कई जाने-माने अर्थशास्त्रियों ने चेतावनी दी है कि विकास की रफ्तार बनाए रखने के लिए भारत को सुधारों और मजबूत प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (FDI) की जरूरत है। भल्ला ने पहले कहा था कि देश गहरे निवेश संकट का सामना कर रहा है। इसे मोदी सरकार के लिए अपनी दिशा सुधारने का सही समय बताया था। उन्होंने धीमी होती विकास दर और निजी निवेश के कमजोर होते माहौल पर भी चिंता जताई थी। पूरी दुनिया में बहुत ज्यादा घबराहट है। जिन लोगों के पास पैसा है, उन्हें ठीक से पता नहीं है कि उसे कहां निवेश करें। हमें अपनी मुख्य नीतियों के बारे में बहुत साफ संदेश देना होगा। यही वह समय है जब हमें उन संदेशों को पूरी तरह से साफ कर देना चाहिए। डर फैलाने वाली बातों की गुंजाइश नहीं...

हालांकि, कुछ दिनों बाद वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने जोर देकर कहा कि भारतीय अर्थव्यवस्था मजबूत है। देश में डर फैलाने वाली बातों की कोई गुंजाइश नहीं है। जब अहलूवालिया से पूछा गया कि क्या आलोचक अर्थव्यवस्था को कमजोर दिखाने की कोशिश कर रहे हैं तो उन्होंने कहा कि कुछ लोग जरूरत से ज्यादा प्रतिक्रिया देते हैं जाने-माने अर्थशास्त्री ने इंडिया टुडे टीवी से बात करते हुए कहा, 'मैं इस बात के पक्ष में हूं कि सरकार को आलोचकों से फायदा उठाना चाहिए। सभी आलोचक समझदार नहीं होते। कुछ लोग अति कर देते हैं। कुछ लोग राजनीतिक रूप से प्रेरित होते हैं। लेकिन, आप इस बात को सुनने को अगर तैयार नहीं हैं कि समस्याएं मौजूद हैं तो आप सुधार करने के मौकों से चूक जाएंगे।'

अहलूवालिया बोले, 'लेकिन, मेरा यकीन कीजिए, सुधार जरूरी हैं। और एक तरह से सरकार ने खुद भी यही कहा है। यहां तक कि प्रधानमंत्री ने भी अपने विदेश दौरे से लौटने के बाद एक बैठक की और सभी मंत्रालयों से कहा कि हमें सुधारों की रफ्तार तेज करनी चाहिए। साफ तौर पर एक धारणा बनी हुई है। सवाल यह है कि सुधार का असली मतलब क्या है।'

टॉप इकोनॉमिस्ट ने कहा कि बहस का मुख्य विषय सुधारों की गुणवत्ता और उनके स्वरूप पर केंद्रित होना चाहिए। उन्होंने कहा, 'कई बार किसी खास स्लोगन को जिस तरह से लागू किया जाता है, उससे शायद वह मकसद या उद्देश्य हासिल नहीं हो पाता जिसके लिए उसे बनाया गया था। हमें इस बात का बहुत ध्यान रखना होगा कि हमारी नीतियां अच्छी तरह से तैयार की गई हों।' जब उनसे पूछा गया कि क्या अर्थव्यवस्था की आलोचना करना डर फैलाने जैसा है तो अहलूवालिया ने कहा कि सरकारों की यह जिम्मेदारी होती है कि वे अर्थव्यवस्था की सुसंगत तस्वीर पेश करें। साथ ही ढांचागत कमजोरियों को भी स्वीकार करें। उन्होंने कहा, 'नहीं, नहीं, मैं डर फैलाने वाला व्यक्ति नहीं हूं। लेकिन, चलिए हकीकत का सामना करते हैं। राजनीति का मतलब ही अलग-अलग विचार होना है। इसलिए, आप उम्मीद कर सकते हैं कि विपक्ष, चाहे वह कुछ भी कहे, हमेशा नकारात्मक पहलुओं को ही उठाएगा।' वह बोले, 'सरकार की जिम्मेदारी है कि वह साफ तस्वीर पेश करे कि उसे क्यों लगता है कि अर्थव्यवस्था अच्छी हालत में है। अब अर्थव्यवस्था में कुछ मजबूतियां हैं। लेकिन, कुछ कमजोरियां भी हैं। इनके बारे में हम कुछ समय से जानते हैं।' निजी निवेश में सुस्ती की तरफ किया इशारा

अर्थशास्त्री ने आगे निजी निवेश में सुस्ती और कमजोर निर्यात की ओर इशारा किया। इन्हें उन्होंने मौजूदा तेल संकट से पहले से चली आ रही पुरानी चिंताएं बताया। उन्होंने कहा, 'यह सिर्फ तेल की कीमतों में बढ़ोतरी की बात नहीं है। उदाहरण के लिए निजी निवेश कई सालों से कम रहा है। निर्यात भी कई सालों से अच्छा प्रदर्शन नहीं कर पाया है। इसलिए 'विकसित भारत' की ओर बढ़ने में कुछ दिक्कतें हैं।' अहलूवालिया बोले कि ऐसे समय में जब दुनिया भर में अनिश्चितता बढ़ रही है, सरकार को अपने सुधार एजेंडे को साफ तौर पर बताना चाहिए। उन्होंने कहा, 'पूरी दुनिया में बहुत ज्यादा घबराहट है। जिन लोगों के पास पैसा है, उन्हें ठीक से पता नहीं है कि उसे कहां निवेश करें। हमें अपनी मुख्य नीतियों के बारे में बहुत साफ संदेश देना होगा। यही वह समय है जब हमें उन संदेशों को पूरी तरह से साफ कर देना चाहिए।'

नुकसान बना फायदा, भारत के एक्सपोर्ट में ट्विस्ट, गिरते रुपये में बाजी पलटने का दम देख रही सरकार

एजेंसी नई दिल्ली

कमजोर रुपये को अक्सर इकोनॉमिक स्ट्रेस यानी आर्थिक तनाव का संकेत माना जाता है। हालांकि, भारत के निर्यातकों के लिए यह अप्रत्याशित फायदे के तौर पर उभर सकता है। सरकार की ताजा आर्थिक समीक्षा में यह बात कही गई है। लेकिन, वित्त मंत्रालय ने आगाह किया है कि यह फायदा तभी मिलेगा जब ग्लोबल डिमांड मजबूत बनी रहे। साथ ही महंगाई को कंट्रोल में रखा जाए। मई महीने की अपनी मासिक आर्थिक समीक्षा में आर्थिक मामलों के विभाग ने तर्क दिया कि रुपये की हालिया गिरावट को केवल करेंसी की कमजोरी के नजरिए से नहीं देखा जाना चाहिए। इसके बजाय, उसने कहा कि कई सालों तक विनिमय दर के ज्यादा होने के बाद इस बदलाव ने भारत की निर्यात प्रतिस्पर्धा को बेहतर बनाया है। रिपोर्ट में कहा गया है, 'करेंसी की गिरावट को अंदरूनी कमजोरी के संकेत के तौर पर देखने की सोच समझ में आती है। लेकिन, इसकी बारीकी से जांच होनी चाहिए।'

पिछले कुछ महीनों में भारतीय रुपया दबाव में आ गया है। इसके पीछे कई कारण हैं। इनमें कच्चे तेल की बढ़ती कीमतें, विदेशी पोर्टफोलियो निवेशकों (एफपीआई) का लगातार बाहर जाना और पश्चिम एशिया में बढ़ता भू-राजनीतिक तनाव शामिल है। समीक्षा के अनुसार, वित्त वर्ष 2025-26 में अमेरिकी डॉलर के मुकाबले भारत की मुद्रा में लगभग 10% की गिरावट आई। पश्चिम एशिया संघर्ष शुरू होने के बाद यह 4.9% और कमजोर हो गई। 26 मई तक यह 95.7 रुपये प्रति डॉलर पर पहुंच गई।

फिर भी सरकार का तर्क है कि ज्यादा महत्वपूर्ण पैमाना नॉमिनल एक्सचेंज रेट नहीं, बल्कि रियल इफेक्टिव एक्सचेंज रेट (REER) है। यह व्यापारिक साझेदारों के मुकाबले प्रतिस्पर्धा का ट्रेड-वेटेड और इनफ्लेशन-एडजस्टेड पैमाना है। अप्रैल 2026 में भारत का REER 92.72 था। यह एक दशक से भी ज्यादा समय में सबसे निचला स्तर था। 100 के मानक स्तर से यह काफी नीचे था। रिपोर्ट में बताया गया कि REER नवंबर 2024 में कई सालों के सबसे ऊंचे स्तर 108.03 पर पहुंच गया था। इससे हालिया सुधार से पहले वैश्विक बाजारों में भारतीय सामान कम प्रतिस्पर्धी हो गए थे। समीक्षा में कहा गया है, 'अब जब भारत का REER अपने लंबे समय के औसत से नीचे है तो भारतीय सामान और सेवाओं की कीमतें वास्तविक रूप से पिछले एक दशक में किसी भी समय की तुलना में ज्यादा प्रतिस्पर्धी हैं।' सरकार इसे निर्यात के लिए एक संभावित बढ़ावा मानती है। खासकर ऐसे समय में जब भारत ग्लोबल मैन्युफैक्चरिंग और ट्रेड में अपनी हिस्सेदारी बढ़ाने की कोशिश कर रहा है। कमजोर करेंसी को लेकर चेतावनी भी आर्थिक सर्वेक्षण 2025-26 का हवाला देते हुए रिपोर्ट में कहा गया है कि रुपये में 1% की गिरावट से मध्यम अवधि में भारत के माल व्यापार (मर्चेंडाइज ट्रेड) संतुलन में 1.45% का सुधार हो सकता है।हालांकि, समीक्षा में इस धारणा के प्रति भी आगाह किया गया है कि कमजोर करेंसी का मतलब अपने आप ही ज्यादा निर्यात होना है। इसमें कहा गया है, 'दूसरी शर्त ग्लोबल मांग है और शायद यह एक ज्यादा बड़ी बाधा है।' रिपोर्ट ने वित्त वर्ष 2013-14 के अनुभव की ओर इशारा किया। तब रुपये में तेजी से गिरावट आई थी। लेकिन, उसके बाद के सालों में निर्यात में कमी आई। कारण है कि कमजोर ग्लोबल डिमांड ने सस्ती करेंसी से होने वाले लाभ को बेअसर कर दिया था। गिरती कमोडिटी कीमतों ने भी इस पर पानी फेरा था। इसमें आगे कहा गया है, 'व्यापार अध्ययन लगातार यह पाते हैं कि निर्यात को बढ़ावा देने वाले फैक्टरों में एक्सचेंज रेट की तुलना में ग्लोबल डिमांड का पलड़ा भारी होता है।' एक और चुनौती कच्चे तेल, उर्वरकों और पूंजीगत वस्तुओं के आयात पर भारत की निर्भरता है। जहां निर्यातकों को आखिरकार कमजोर रुपये से लाभ हो सकता है। वहीं, आयात की लागत तुरंत बढ़ जाती है। इससे व्यवसायों और उपभोक्ताओं पर दबाव बढ़ता है। महंगाई बढ़ी तो फायदा हो जाएगा कम रिपोर्ट में जिक्र किया गया है कि अगर महंगाई बढ़ती है तो कच्चे तेल, LNG और खाद्य तेलों जैसी कमोडिटीज की ऊंची कीमतें प्रतिस्पर्धात्मकता से होने वाले फायदे के एक हिस्से को कम कर सकती हैं। इसके बावजूद सरकार ने जोर देकर कहा कि भारत की व्यापक आर्थिक स्थिति मजबूत बनी हुई है। 8 मई तक विदेशी मुद्रा भंडार लगभग 697 अरब डॉलर था। यह लगभग 11 महीनों के आयात को कवर करने के लिए पर्याप्त है। वहीं, वित्त वर्ष 2025-26 में सकल प्रत्यक्ष विदेशी निवेश का प्रवाह रिकॉर्ड 94.5 अरब डॉलर तक पहुंच गया।

उप्र का अनोखा 'मेंढक मंदिर', यहां नंदी नहीं मेंढक हैं भोलेनाथ की सवारी

वैसे तो दुनियाभर में भगवान शिव के कई प्राचीन, अद्भुत और विशाल मंदिर स्थापित हैं। इस शिव मंदिरों को लेकर अपनी-अपनी मान्यताएं प्रचलित हैं। ऐसे में आज हम आपको उत्तर प्रदेश के एक अनोखे मंदिर के बारे में बताने जा रहे हैं, जोकि वास्तुकला की दृष्टि से बहुत अनोखा है। यह अपनी तरह का एक मात्र मंदिर है। वहीं सावन और महाशिवरात्रि के पावन मौके पर इस मंदिर में श्रद्धालुओं की भारी भीड़ देखने को मिलती है। इसलिए आज इस आर्टिकल के जरिए हम आपको 'मेंढक मंदिर' के नाम से जाने वाले इस अद्भुत मंदिर के बारे में बताने जा रहे हैं।

जानिए कहां है मंदिर उत्तर प्रदेश के लखीमपुर खीरी जिले के ओयल कस्बे में नर्मदेश्वर महादेव मंदिर स्थित है। यह मंदिर लखीमपुर-सीतापुर मार्ग पर लखीमपुर से करीब 12 की दूरी पर स्थित है। एक विशाल मेंढक की आकृति वाले चबूतरने पर मंदिर विराजमान है। जिस वजह से इसको 'मेंढक मंदिर' कहा जाता है।

मंदिर का निर्माण साल 1860-1870 के बीच ओयल रियासत के राजा बख्श सिंह ने इस मंदिर का निर्माण करवाया था। इसके पीछे एक कथा प्रचलित है, जिसके मुताबिक चाहमाना वंश के राजा बख्श सिंह के राज में भयंकर सूखा अकाल पड़ गया था।

राजा भोलेनाथ के भक्त थे और राजा ने एक तांत्रिक की सलाह पर 'मंडूक तंत्र' के आधार पर इस मंदिर का निर्माण मेंढक के आकार में कराया था। इस मंदिर के निर्माण का उद्देश्य बाढ़-सूखे से क्षेत्र की रक्षा करना था। ऐसे में ओयल कस्बे में स्थित नर्मदेश्वर महादेव मंदिर को सुख-समृद्धि का प्रतीक माना जाता है।

मुख्य विशेषताएं- नर्मदेश्वर महादेव मंदिर अपनी अनूठी वास्तुकला के लिए जाना जाता है, जोकि राजस्थानी वास्तुकला पर आधारित है। मंदिर एक विशाल मेंढक की आकृति के ऊपर बना है। जिसके ऊपर भोलेनाथ का मंदिर है।

भोलेनाथ नंदी पर नहीं बल्कि मेंढक की पीठ पर बैठे हैं और यहां पर मेंढक की पूजा की जाती है।

अन्य शिव मंदिरों में नंदी को बैठी हुई मुद्रा में देखा होगा, वहीं इस मंदिर में नंदी खड़ी मुद्रा में नजर आते हैं, जोकि अपने आप में अनूठा है।

नर्मदेश्वर मंदिर मांडुक तंत्र पर आधारित है।

इस मंदिर में स्थापित शिवलिंग नर्मदा नदी से लाया गया था। इसको लेकर मान्यता है कि यह शिवलिंग दिन में 3 बार रंग बदलता है।

अधिक मास पूर्णिमा पर करें ये चमत्कारी उपाय, मिलेगा दोगुना लाभ, घर आएगी सुख-समृद्धि

हिंदू धर्म में पूर्णिमा तिथि का विशेष महत्व माना जाता है। पूर्णिमा के दिन की गई पूजा का पूर्ण फल व्यक्ति को मिलता है, लेकिन अधिक मास की पूर्णिमा पूजा, नाम जप और दान-पुण्य के कार्य करने से जातक को डबल फायदा होता है। भगवान विष्णु जातक की सभी मानोकामना पूर्ण करते हैं और इस दिन समस्त पापों के मुक्ति के द्वार खुल जाते हैं। अधिक मास की पूर्णिमा का विशेष महत्व होता है क्योंकि अधिकमास 3 वर्ष में आता है, इस बार ज्येष्ठ का महीना अधिकमास है। अधिक मास की शुरुआत 17 मई को हुई और इसका समापन 15 जून को होगा।

इस बार अधिक मास की पूर्णिमा 31 मई 2026, रविवार को है। इस दौरान आप खुशहाल जीवन के लिए कुछ उपाय कर सकती हैं। आइए आपको बताते हैं पूर्णिमा के दिन कुछ जरुरी उपाय, जिन्हें आप जरुर करें।

माता लक्ष्मी और विष्णु जी की पूजा करें अगर आप अधिक मास की पूर्णिमा पर भगवान विष्णु और माता लक्ष्मी की पूजा करेंगी, तो आपकी सभी मानोकामनाएं पूर्ण होगी। प्रातः काल जल्दी उठकर स्नान आदि से मुक्त होकर विष्णु जी को स्नान कराने के बाद एक चौकी पर लाल कपड़ा बिछाएं और मूर्ति स्थापित करें। इसके साथ ही माता लक्ष्मी की प्रतिमा को भी स्थापित करें। अब श्री विष्णु जी को चंदन का तिलक लगाएं और माता लक्ष्मी को सिंदूर का टीका लगाकर विधि-विधान के साथ पूजन करें। इससे विष्णु जी का आशीर्वाद मिलेगा और कष्टों से मुक्ति मिल सकती हैं।

चंद्रमा को अर्घ्य दें- पूर्णिमा तिथि के दिन चंद्रमा अपनी पूर्ण कलाओं से युक्त होता है। अगर आप अधिक मास की पूर्णिमा तिथि पर चंद्रमा को अर्घ्य देंगी, तो आपको काफी शुभ परिणाम मिलेंगे। जिनकी कुंडली में चंद्रमा कमजोर है, मजबूत बनेगा। आपको एक तांबे के लोटे में जल लेकर उसमें कच्चे दूध की कुछ बूंदें मिलाएं और चंद्रमा को अर्घ्य दें, तो आपके जीवन में सकारात्मक बदलाव हो सकते हैं। इस उपाय से आपको चंद्रमा की पूर्ण ऊर्जा मिलती है।

जरूरतमंदों को दान दें- धार्मिक मान्यता के अनुसार, पूर्णिमा तिथि पर दान-पुण्य के कार्य करना बेहद शुभ होता है। वहीं अधिक मास की पूर्णिमा तिथि के दिन दान करना दोगुने फलों की प्राप्ति होती है। इस दिन जरुरतमंदों को दान देने से शुभ परिणाम मिलते हैं। इसके साथ ही भगवान विष्णु और माता लक्ष्मी की कृपा प्राप्त होती है।

सत्यनारायण की कथा का पाठ करें- अधिक मास की पूर्णिमा के दिन सत्यनारायण की कथा का पाठ करना बेहद शुभ माना जाता है। इस दिन आप कथा का आयोजन करें और श्रद्धा से प्रसाद बनाएं। इस प्रसाद को समस्त परिवार और मित्रों को अर्पित करें। ऐसा करने से आपके जीवन में चल रही सभी समस्याएं दूर हो जाएंगी।

कंस के हाथों मारे गए माता देवकी के 6 पुत्र वास्तव में कौन थे, श्री कृष्ण ने राजा बलि के सामने खोला था ये रहस्य

श्रीमद्भागवत महापुराण के दशम स्कंध में एक अत्यंत अलौकिक और ज्ञान-भक्ति से भरपूर कथा बताई गई है। जहां पर श्री कृष्ण और बलराम अपनी माता देवकी और पिता वासुदेव से मिलने के लिए जाते हैं। माता-पिता को पहले ही अपने पुत्र श्री कृष्ण के ब्रह्मज्ञान और उनकी महिमा के बारे में सुन चुके थे। ऐसे में माता देवकी भी अपने भाई कंस द्वारा मारे गए पुत्रों की याद में काफी व्याकुल और विचलित थी। उनको स्मरण करके जब माता की आंखों में आंसू आ गए और उन्होंने बड़े ही करुण स्वर से श्री कृष्ण और बलराम जी मरे हुए पुत्रों से दोबारा मिलवाने के लिए कहा। ऐसे में श्री कृष्ण ने बिना पल सोचे बलराम जी से साथ सुतल लोक जाते हैं। जहां पर राजा बलि उनसे वहीं आने का प्रयोजन पूछते हैं। तब श्री कृष्ण अपने मृत छह भाइयों और उन्हें ब्रह्मा जी से मिले श्राप के बारे में विस्तार से बताते हैं। आइए आज 'धर्म गाथा' श्रृंखला में जानते हैं आखिर कौन से श्री कृष्ण के मृत 6 भाई जिन्हें पापी कंस ने एक-एक करके पत्थर में पटक कर मार डाला था

वास्तव में कौन थे श्री कृष्ण के छह भाई?

श्रीमद्भागवत पुराण में दी गई कथा के अनुसार, स्वयं श्री कृष्ण और बलराम सुतल लोक जाकर अपने भाइयों को लेने जाते हैं। जहां पर उन्होंने राजा बलि को इनके बारे में बताया। उन्होंने कहा कि कंस के हाथों मारे गए वे बालक कोई साधारण बच्चे नहीं थे। बल्कि पूर्वजन्म में वह ब्रह्मा जी के मानपुत्र प्रजापति मरीचि और उनकी पत्नी ऊर्णा के पुत्र थे यानी वह भी उच्च पद के देवता थे जिनके नाम स्मर, उद्गीथ, परिष्वंग, पतंग, क्षुद्रभूत और घृणी था।

ब्रह्मा जी का परिहास करने पर मिला भयंकर श्राप एक बार ब्रह्मा जी अपनी ही पुत्री सरस्वती के प्रति आकर्षित इतने आकर्षित हो गए और उनसे उद्यत हुए। दृष्टि के रचयिता का इस तरह का अप्रत्याशित रूप और मर्यादा के उल्लंघन को देखकर मरीचि के छह पुत्र अपनी चंचलता और अज्ञानतावश के कारण जोर-जोर से हंसने लगे।

इस तरह से सभी देवताओं और ऋषियों के सामने उनका हंसना और मजाक उड़ाना ब्रह्मा जी को रास नहीं आया और उनके लिए यहीं अपराध भारी पड़ गया। उनके इस कृत से क्रोधित होकर ब्रह्मा जी ने छह भाइयों को श्राप दे दिया श्लोक-

मरीचेरभवन् पुत्राः षड् जीवन्त्युर्णया युताः ।
प्रहसन् कश्मलं दृष्ट्वा ब्रह्माणं दुहितृगामिनम् ॥
(श्रीमद्भागवत महापुराण – 10.85.47)
तेन शापेन ते जाता हिरण्यकशिपोः सुताः ।
योगमायया च देवक्या जठरं गमिता नृप ॥
(श्रीमद्भागवत महापुराण – 10.85.48)

इस श्राप के अनुसार, प्रजापति मरीचि के छह पुत्र असुर-योनि में पहले राक्षस हिरण्यकश्यप के पुत्र के रूप से उत्पन्न होंगे।फिर योगमाया उन्हें वहां से लाकर देवकी के गर्भ में रख देगी और उनको उत्पन्न होते ही कंस ने मार डालेंगे। ऐसे में कंस के द्वारा मारे गए 6 पुत्र असल में प्रजापति मरीचि के पुत्र थे।

असुर योनि से लेकर माता देवकी के गर्भ तक का सफर ब्रह्मा जी के शाप के कारण प्रजापति मरीचि के छह पुत्रों का असुरराज हिरण्यकश्यप के पुत्रों के रूप में पैदा हुए। लेकिन कालान्तर में भगवान की दिव्य योगमाया ने अपनी शक्ति से उन्हें वहां से अदृश्य किया। फिर वह कंस की कारागार में बंद माता देवकी के गर्भ से एक-एक करके उत्पन्न हुए। लेकिन पापी कंस ने उन्हें अपना काल समझकर हर एक पुत्र को पत्थर में पटक-पटक कर मार डाला। जहां से वह पुनर्जन्म में कि पापों का प्रायश्चित करते हुए सुतल लोक चले गए।

आर्थिक राशिफल : अनुशासन और सही डॉक्यूमेंटेशन से मिलेगी वित्तीय सफलता

मेष राशि वित्तीय मामलों में आज सावधानी बरतने की जरूरत है, खासकर इम्पल्सिव बाइंग पर रोक लगाएं। आमदनी के नए अवसर नेटवर्क के जरिए मिल सकते हैं, लेकिन आज किसी भी तरह के सट्टेबाजी या जोखिम भरे निवेश से पूरी तरह दूर रहें। अपने वर्तमान बजट की समीक्षा करें और लक्ज़री की वस्तुओं पर अनावश्यक खर्चों में कटौती करें।

वृष राशि आर्थिक दृष्टिकोण से आपके बेहतरीन संवाद कौशल और संपर्कों के माध्यम से धन लाभ के अच्छे अवसर हाथ लग सकते हैं। हालांकि, सुख-सुविधाओं और लग्जरी आइटम्स पर अचानक भारी खर्च करने की इच्छा हो सकती है, जिस पर नियंत्रण रखना जरूरी है। भविष्य के निवेशों की योजना बनाने या जरूरी कॉन्ट्रैक्ट्स पर हस्ताक्षर करने के लिए दिन अच्छा है। आज किसी को उधार न दें।

मिथुन राशि आपकी आर्थिक स्थिति आज पूरी तरह से स्थिर और सुरक्षित बनी रहेगी। हालांकि, आपको आज बिना सोचे-समझे शॉपिंग करने या फिजूलखर्ची करने की इच्छा से बचना होगा। लॉन्ग-टर्म सेविंग्स की समीक्षा करने के लिए आज का दिन बहुत अनुकूल है। नए और रचनात्मक विचारों से आपके धन में वृद्धि होगी, लेकिन किसी भी प्रकार के वित्तीय शॉर्टकट या सट्टेबाजी से दूर रहें।

कर्क राशि वित्तीय स्थिति मजबूत और स्थिर दिखाई दे रही है। आपके ग्रह गोचर आपको स्मार्ट और लंबे समय की बचत योजनाएं बनाने के लिए प्रेरित कर रहे हैं। आज अपने मासिक बजट को व्यवस्थित करने और खर्चों को कम करने के व्यावहारिक तरीके खोजने के लिए समय निकालें। किसी के बहकावे में आकर कोई बड़ी और महंगी खरीदारी करने से आज बचना ही आपके लिए समझदारी होगी।

सिंह राशि आर्थिक दृष्टिकोण से आज का दिन पॉजिटिव और प्रोडक्टिव रहेगा। आपको अपने पुराने निवेशों या व्यावसायिक नेटवर्क के माध्यम से अच्छी पहचान और वित्तीय लाभ मिल सकता है। हालांकि, केवल दूसरों को प्रभावित करने या अपनी साख दिखाने के लिए महंगी वस्तुओं पर धन बर्बाद करने से बचें। जॉइंट एसेट्स की समीक्षा करने या पारिवारिक बजट की रूपरेखा तैयार करने के लिए दिन अच्छा है।

कन्या राशि आपकी आर्थिक स्थिति आज पूरी तरह नियंत्रण में रहेगी। आपकी रणनीतिक और वित्तीय नियोजन क्षमताएं लाभ के नए रास्ते खोल सकती हैं। जॉइंट फाइनेंसेस या पारिवारिक खर्चों को लेकर अचानक कोई जिम्मेदारी सामने आ सकती है, इसलिए बजट को व्यवस्थित रखें। कहीं भी बिना सोचे-समझे या बिना पूरी रिसर्च के पैसा निवेश करने से पूरी तरह बचें।

तुला राशि वित्तीय मामलों में आज का दिन बहुत ही संभलकर चलने का है। अपने रोजमर्रा के खर्चों पर पैनी नजर रखें और उन्हें बारीकी से ट्रैक करें। आज किसी भी प्रकार के बड़े सट्टेबाजी वाले निवेशों से दूर रहें और किसी अपरिचित या कम जान-पहचान वाले व्यक्ति को पैसा उधार देने की गलती बिल्कुल न करें। आपकी भविष्य की वित्तीय स्थिति सुरक्षित है, बशर्ते आप आज व्यावहारिक बजट और बचत का पालन करें।

वृश्चिक राशि आज का दिन छिपे हुए लाभ देने वाला रहेगा। पैतृक संपत्ति, पारिवारिक सहयोग या संयुक्त संपत्तियों के माध्यम से दीर्घकालिक लाभ के नए अवसर मिल सकते हैं। जल्दबाजी में बिना सोचे-समझे कोई भी नया निवेश करने से बचें। अपने वित्तीय रिकॉर्ड और बीमा पॉलिसियों को व्यवस्थित करने से सुरक्षा मिलेगी।

धनु राशि आपकी आर्थिक स्थिति आज सामान्य रूप से स्थिर रहेगी। हालांकि, चंद्रमा की स्थिति के कारण अचानक कुछ गुप्त या अनपेक्षित खर्चे सामने आ सकते हैं, जिस पर कड़ी नजर रखना जरूरी है। आज इमोशनल बाइंग से बचें। दैनिक बजट की समीक्षा करना और खर्चों पर नियंत्रण रखना आपके बैंक बैलेंस को सुरक्षित रखेगा।

मकर राशि आर्थिक मामलों में आज सतर्कता अपनाने की जरूरत है। सुख-सुविधाओं या विलासिता के साधनों पर अचानक भारी धन खर्च करने या किसी को बड़ा लोन देने से पूरी तरह बचें। हालांकि आपकी नियमित नौकरी या व्यवसाय से आय के स्रोत अच्छे बने हुए हैं, फिर भी आज किसी भी प्रकार के अनपेक्षित और जोखिम भरे निवेश में हाथ डालने से बचना ही वित्तीय सुरक्षा देगा।

कुंभ राशि वित्तीय दृष्टिकोण से आज का दिन स्थिर रहेगा, जिसमें आपका मुख्य ध्यान अपनी दीर्घकालिक बचत और व्यक्तिगत संपत्तियों को व्यवस्थित करने पर रहेगा। मनोरंजन, पार्टियों या विलासिता के साधनों पर अचानक होने वाले भारी खर्चों पर रोक लगाएं। अपने पारिवारिक बजट की समीक्षा करें और अपनी कमाई को सुरक्षित करने के व्यावहारिक तरीके खोजें। वित्तीय मामलों में अनुशासन आपको तनावमुक्त रखेगा।

मीन राशि आर्थिकः आर्थिक मोर्चे पर आज का दिन काफी सकारात्मक संकेत दे रहा है, बशर्ते आपका पूरा ध्यान अपने परिवार की दीर्घकालिक वित्तीय सुरक्षा पर केंद्रित रहे। घर की साज-सज्जा या लग्जरी आइटम्स पर अचानक होने वाले खर्चों से आज खुद को दूर रखें। बिना पूरी जांच-पड़ताल और रिसर्च के कहीं भी बड़ा निवेश न करें और न ही किसी को उधार दें। बजट का पालन करने से आपके संसाधन सुरक्षित रहेंगे।

तुरंत बदलें सोने की दिशा, बेड से जुड़ी ये गलतियां रोक सकती हैं आपकी सक्सेस

क्या आप जानते हैं कि सोने की दिशा और सोने का तरीका व्यक्ति के जीवन को कई तरह से प्रभावित कर सकता है। क्योंकि सोने का तरीका न सिर्फ आपकी सेहत बल्कि आपकी सफलता में भी बाधा बन सकता है। वास्तु शास्त्र में सोने की सही दिशा और सोने का सही तरीका बताया गया है। जिसको अपनाकर आप जीवन में आने वाली बाधाओं को दूर कर सकता है। वास्तु शास्त्र के मुताबिक आपका बेड आपकी सक्सेस का रास्ता रोक सकता है। ऐसे में आज इस आर्टिकल के जरिए हम आपको बताने जा रहे हैं कि सोने के लिए सही दिशा और तरीका क्या है। सोने की सही दिशा वास्तु शास्त्र के मुताबिक सोने के लिए दक्षिण दिशा को सबसे ज्यादा शुभ माना जाता है। दक्षिण दिशा में सिर करके सोने से स्थिरता आती है। साथ ही आर्थिक मामलों में तरक्की मिलने लगती है। वहीं दक्षिण दिशा में सिर करके सोने से अच्छी और गहरी नींद आती है। स्टूडेंट्स और नौकरीपेशा लोगों के लिए सोने की सबसे अच्छी दिशा पूर्व दिशा मानी जाती है। इस दिशा में सिर करके सोने से एकाग्रता और याददाश्त तेज होती है। वहीं करियर में भी नए मौके मिलते हैं। बेड की सही पॉजिशन बेड का सही दिशा में होना जरूरी होता

है। क्योंकि बेड की सही दिशा आपकी सफलता का रास्ता खोल सकता है। घर का मास्टर बेडरूम दक्षिण-पश्चिम दिशा में होना चाहिए। ऐसा होने से घर के सदस्यों को सफलता मिलने लगती है। बेड को दीवार के बीच में रखना चाहिए। जिससे कि दोनों ओर से ऊर्जा का प्रवाह हो सकें। कभी भी उत्तर दिशा की ओर सिर करके नहीं सोना चाहिए। क्योंकि यह मेगनेटिक फिल्ड को डिस्टर्ब कर सकता है। इस तरह से सोने से आपको आर्थिक समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है। कभी भी बीम के नीचे बेड नहीं रखना चाहिए। क्योंकि ऐसा करने से करियर में प्रेशर और आर्थिक समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है। वास्तु के मुताबिक कमरे के अंदर बेड के सामने मिरर नहीं होना चाहिए। यह निगेटिव एनर्जी को बढ़ाता है और तनाव की वजह बन सकता है। बेड के नीचे कूड़ा-कचरा नहीं होना चाहिए, इससे तनाव ज्यादा बढ़ सकता है। बेडरूम में लकड़ी के बेड को रखना चाहिए। लकड़ी का बेड घर में सकारात्मकता आती है और पॉजिटिविटी के लिए भी अच्छा होता है। कमरे के अंदर लोहे का बेड नहीं रखना चाहिए। इस बेड को रखने से घर में निगेटिविटी आती है।

कांग्रेस की नाव से भाजपा के घाट पर पहुंचे जनप्रतिनिधि, सारनी में सियासत ने बदली करवट

सवालों के घेरे में कांग्रेस का स्थानीय संगठन, वार्ड 11 की पार्षद सहित दर्जनों कार्यकर्ताओं ने थामा भाजपा का दामन

दैनिक कारखाने का सफर। सारनी

राजनीति के रंगमंच पर शुक्रवार की शाम एक ऐसा दृश्य देखने को मिला जिसने सारनी की सियासत में नई चर्चाओं को जन्म दे दिया।संत कबीर दास वार्ड क्रमांक 11 की कांग्रेस समर्थित पार्षद हरिता शांति पाल,सतीश पटेल तथा दर्जनों समर्थकों ने भारतीय जनता पार्टी की सदस्यता ग्रहण कर ली।भाजपा कार्यालय में हुए इस घटनाक्रम ने न केवल भाजपा खेमे में उत्साह का संचार किया,बल्कि कांग्रेस संगठन की जमीनी पकड़ पर भी कई सवाल खड़े कर दिए।कहा जाता है कि राजनीति में कोई स्थायी मित्र या शत्रु नहीं होता,लेकिन जब अपने ही लोग एक-एक कर दूसरे पाले में जाने लगें तो यह केवल संयोग नहीं बल्कि संगठन की सेहत का आईना भी माना जाता है।सारनी ब्लॉक कांग्रेस की स्थिति को देखकर ऐसा प्रतीत हो रहा है मानो बगीचे का माली फूलों की गिनती में व्यस्त था और पौधे चुपचाप दूसरी क्यारी में रोपे जा रहे थे।जिला कांग्रेस अध्यक्ष निलय डागा जिलेभर में संगठन को मजबूत करने के प्रयासों में जुटे हुए हैं, लेकिन सारनी ब्लॉक में उनकी रणनीति अपेक्षित परिणाम देती नजर नहीं आ रही।स्थानीय स्तर पर कार्यकर्ताओं और जनप्रतिनिधियों को एकजुट रखने की जिम्मेदारी निभाने वाले नेताओं की कार्यशैली अब चर्चा का

विषय बन गई है।राजनीतिक गलियारों में यह सवाल गूंज रहा है कि आखिर संगठन की चौखट इतनी कमजोर कैसे हो गई कि चुने हुए जनप्रतिनिधि भी उसे छोड़ने में संकोच नहीं कर रहे।इस अवसर पर आमला विधायक डॉ.योगेश पंडाग्रे ने नए सदस्यों का स्वागत करते हुए कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और मुख्यमंत्री डॉ.मोहन यादव की विकासोन्मुखी नीतियों से प्रभावित होकर इन जनप्रतिनिधियों ने भाजपा का दामन थामा है।उन्होंने 660 मेगावाट की सुपर क्रिटिकल परियोजना का उल्लेख करते हुए स्थानीय युवाओं को रोजगार दिलाने के लिए प्रयासरत रहने की बात कही।नगर पालिका अध्यक्ष किशोर बरदे ने इसे कांग्रेस की विचारधारा से जनप्रतिनिधियों के मोहभंग का संकेत बताया।वहीं भाजपा युवा मंडल अध्यक्ष नीतिकर (गोलू) राजपूत ने कहा कि नए साथियों के जुड़ने से परिषद में भाजपा की स्थिति और मजबूत होगी तथा विकास कार्यों को गति मिलेगी।राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि यह केवल दल परिवर्तन की घटना नहीं है,बल्कि सारनी कांग्रेस संगठन के लिए चेतावनी की घंटी भी है।यदि समय रहते आत्ममंथन नहीं किया गया तो आने वाले दिनों में यह सियासी पलायन और भी बड़े रूप में दिखाई दे सकता है।फिलहाल इतना तय है कि सारनी की राजनीति में भाजपा ने एक महत्वपूर्ण बढ़त दर्ज की है, जबकि कांग्रेस के सामने अपने घर की चौखट मजबूत करने की चुनौती खड़ी हो गई है।

इनका कहना है :

वार्ड क्रमांक 11 की कांग्रेस की पार्षद हरित पाल,उनके पति शांति पाल उनके द्वारा संगठन से कोई परेशानी यह कोई तकलीफ थी तो उन्हें चर्चा किया जाना था लेकिन उन्होंने यह औचक निर्णय लिया है संगठन की कहां गलती हुई है इस पर शोध और मंथन करने का काम किया जाएगा।

-बटेश्वर भारती,
ब्लॉक कांग्रेस कमेटी अध्यक्ष सारनी

अवैध मादक पदार्थ कारोबारियों पर शिकंजा

गांजा कारोबार में लिप्त 3 महिला तस्कर गिरफ्तार, पहले दो लोग जा चुके जेल

दैनिक कारखाने का सफर। सारनी

विद्युत नगरी सारनी और आसपास के क्षेत्रों को मादक पदार्थों के अवैध कारोबार से मुक्त बनाने के लिए सारनी पुलिस लगातार अभियान चला रही है। इसी क्रम में 30 मई को पुलिस ने गांजा बेचने के आरोप में तीन महिलाओं को गिरफ्तार कर न्यायालय में पेश किया,जहां से उन्हें जेल भेज दिया गया। थाना प्रभारी जयपाल इनवाती ने बताया कि गिरफ्तार महिलाओं में सीमा उर्फ रमती भाई (40 वर्ष) निवासी बगडोना बस्ती, कविता सरियाम (35 वर्ष) निवासी कैलाश नगर शोभापुर तथा सविता उईके (40 वर्ष) निवासी बगडोना बस्ती शामिल हैं।

पुलिस ने इनके खिलाफ एनडीपीएस एक्ट के तहत कार्रवाई की है। इससे पहले 10 मई को मुखबिर से प्राप्त सूचना के आधार पर सारनी पुलिस ने बगडोना बस्ती निवासी बबलू धुर्वे और नगर पालिका क्षेत्र निवासी शेख शहीद को अवैध गांजा कारोबार के मामले में गिरफ्तार कर न्यायालय के माध्यम से जेल भेजा था। दोनों आरोपियों के खिलाफ धारा 8/20 एनडीपीएस एक्ट के अंतर्गत कार्रवाई की गई थी।पुलिस के अनुसार,प्रारंभिक आरोपियों से पूछताछ और विवेचना के दौरान प्राप्त तथ्यों एवं मेमोरेण्डम के आधार पर इस नेटवर्क से जुड़े अन्य लोगों के नाम सामने आए थे। इन्हीं तथ्यों के आधार पर गठित पुलिस टीम ने कार्रवाई करते हुए तीनों महिलाओं को गिरफ्तार किया है।थाना प्रभारी जयपाल इनवाती ने बताया कि पुलिस अधीक्षक वीरेंद्र जैन के निर्देशन में जिलेभर में अवैध मादक पदार्थों की तस्करी,भंडारण और बिक्री के विरुद्ध विशेष अभियान चलाया जा रहा है। पुलिस को क्षेत्र के कुछ अन्य स्थानों पर भी गांजा बिक्री की सूचनाएं प्राप्त हुई हैं,जिनकी जांच की जा रही है। जल्द ही ऐसे स्थानों पर भी दबिश देकर सख्त कार्रवाई की जाएगी।पुलिस अधिकारियों का कहना है कि युवाओं को नशे की गिरफ्त से बचाने तथा क्षेत्र में कानून-व्यवस्था बनाए रखने के लिए यह अभियान लगातार जारी रहेगा।अवैध मादक पदार्थों के कारोबार में संलिप्त किसी भी व्यक्ति को बख्शा नहीं जाएगा और दोषियों के विरुद्ध कठोर कानूनी कार्रवाई सुनिश्चित की जाएगी। इस मामले में निष्पक्ष कार्रवाई किए जाने में सारनी थाना प्रभारी जयपाल इनवाती,उप निरीक्षक प्रीति पालीवाल, प्रधान आरक्षक श्रीराम उईके आरक्षक मोहित भट्टी,जितेंद्र मोर,मोनू उईके,वर्षा नागले, लक्ष्मी कश्यप का महत्वपूर्ण योगदान रहा।

70 प्रतिशत रोजगार के दावे हवा में, धरातल पर ठेका तंत्र और बिचौलियों का बोलबाला

निरीक्षण की चमक, हकीकत की धूल 11हजार 678 करोड़ की परियोजना में स्थानीय युवाओं के सपनों पर बाहरी कब्जा...!

दैनिक कारखाने का सफर। सारनी

आमला विधानसभा क्षेत्र के विधायक डॉ.योगेश पंडाग्रे ने को 11 हजार 678 करोड़ रुपये की लागत से बन रही 660 मेगावाट की सुपर क्रिटिकल इकाई का निरीक्षण कर विकास और स्थानीय रोजगार के बड़े-बड़े दावे दोहराए।निर्माणाधीन स्थल पर मेन प्लांट,बैचिंग प्लांट,स्टॉक यार्ड,साइट ऑफिस,आवासीय कॉलोनी और मछली कांटा बायपास रोड का अवलोकन करते हुए अधिकारियों को गुणवत्ता और समय-सीमा का विशेष ध्यान रखने के निर्देश दिए गए।लेकिन सवाल यह है कि निरीक्षण के दौरान क्या उन स्थानीय बेरोजगार युवाओं की पीड़ा भी दिखाई दी,जो रोजगार की उम्मीद लेकर परियोजना के गेट पर भटक रहे हैं।क्या उन मजदूरों की आवाज भी सुनाई दी,जिन्हें कलेक्टर दर से कम वेतन देकर काम कराया जा रहा है और क्या उन पेटी ठेकेदारों की भूमिका पर भी चर्चा हुई, जिन्होंने रोजगार को सेवा नहीं बल्कि कारोबार बना दिया

है।परियोजना प्रबंधन और जनप्रतिनिधियों द्वारा लगातार यह दावा किया जा रहा है कि 70 प्रतिशत रोजगार स्थानीय युवाओं को दिया जा रहा है,जबकि वास्तविकता इससे बिल्कुल उलट नजर आती है।निर्माण स्थल पर बड़ी संख्या में बाहरी जिलों और राज्यों के श्रमिक कार्यरत हैं।स्थानीय युवाओं को यदि अवसर मिल भी रहा है तो 7 से 10 हजार रुपये मासिक वेतन पर,जो महंगाई और श्रम के अनुपात में बेहद कम माना जा रहा है।

स्थानीय लोगों का आरोप है कि सत्ता के संरक्षण में कुछ प्रभावशाली लोग अधिकारियों पर दबाव बनाकर काम की पेटियां हासिल कर रहे हैं। नतीजा यह है कि असली मजदूरों और योग्य युवाओं तक रोजगार के अवसर पहुंचने के बजाय बिचौलियों और ठेका नेटवर्क की जेबें भर रही हैं। करोड़ों की परियोजना में रोजगार का लाभ जनता तक पहुंचने के बजाय कुछ चुनिंदा लोगों तक सीमित होता दिखाई दे रहा है।

विडंबना यह भी है कि मजदूरों के हक और अधिकारों की लड़ाई लड़ने का दावा करने वाले कई चेहरे आज परियोजना परिसर में अधिकारियों के इर्द-गिर्द घूमते नजर आते हैं। जिनकी जिम्मेदारी मजदूरों की आवाज बुलंद करना थी, वे व्यवस्था के गुणगान में अधिक व्यस्त दिखाई देते हैं। परिणाम स्वरूप मजदूरों की समस्याएं अखबारों के छोटे कॉलमों तक सिमट कर रह गई हैं।क्षेत्रवासियों का कहना है कि यदि वास्तव में 70 प्रतिशत स्थानीय रोजगार की नीति लागू है तो प्रशासन और प्रबंधन को रोजगार प्राप्त स्थानीय युवाओं की सूची सार्वजनिक करनी चाहिए। साथ ही श्रमिकों को दिए जा रहे वेतन,ठेकेदारों की नियुक्ति प्रक्रिया और श्रम कानूनों के पालन की स्वतंत्र जांच भी कराई जानी चाहिए।11 हजार 678 करोड़ रुपये की यह महत्वाकांक्षी परियोजना क्षेत्र के विकास का नया अध्याय लिख सकती है,यदि स्थानीय युवाओं को रोजगार,मजदूरों को उचित वेतन और पारदर्शी व्यवस्था नहीं मिली तो यह परियोजना विकास की मिसाल कम और दावों व हकीकत के बीच बढ़ती खाई का प्रतीक अधिक बन जाएगी।

सियासत की बिसात पर बदला पाला या भुगतान का खेल कांग्रेस पार्षद का भाजपा में जाने पर उठे नए सवाल

स्वागत द्वार के 15 लाख रुपये,कांग्रेस की निष्ठा और भाजपा की मुस्कान शहर की फिज़ाओं में चर्चा, सियासी गलियारों में हलचल

दैनिक कारखाने का सफर। सारनी

राजनीति के रंगमंच पर कब कौन-सा किरदार अपना संवाद बदल दे,यह कहना मुश्किल है।संत कबीर दास वार्ड की कांग्रेस पार्षद हरिता पाल का शुक्रवार को अचानक भारतीय जनता पार्टी में शामिल होना केवल एक दल-बदल की घटना नहीं माना जा रहा,बल्कि इसके पीछे कई तरह की चर्चाएं और कयासों का बाज़ार भी गर्म हो गया है।

नगर के सियासी गलियारों में चर्चा है कि नगर पालिका परिषद सारनी में लगभग 15 लाख रुपये की लागत से निर्मित एक स्वागत द्वार का भुगतान लंबे समय से अटका हुआ है।बताया जा रहा है कि इस निर्माण कार्य से जुड़े लोगों को आशंका है कि लगातार उठ रही शिकायतों और प्रकाशित समाचारों के कारण भुगतान प्रक्रिया प्रभावित हो सकती है।ऐसे में कुछ राजनीतिक समीकरणों को साधकर रास्ता आसान बनाने की कोशिश की गई है। सूत्रों के मुताबिक,भाजपा में शामिल हुईं पार्षद हरिता पाल के परिजन इस निर्माण कार्य से जुड़े बताए जाते हैं। यही कारण है कि उनके भाजपा में प्रवेश को लेकर तरह-तरह की चर्चाएं सामने आ रही हैं।राजनीतिक जानकार इसे महज़ वैचारिक परिवर्तन नहीं,बल्कि सियासी शतरंज' की एक सोचीसमझी चाल के रूप में भी देख रहे हैं।दिलचस्प पहलू यह भी है कि एक ओर तरुण पाल स्वयं को कांग्रेस का निष्ठावान कार्यकर्ता बताते हैं,वहीं दूसरी ओर अपने चाचा-चाची को भाजपा कार्यालय तक पहुंचाने में उनकी सक्रिय भूमिका चर्चा का विषय बनी हुई है।ऐसे में कांग्रेस के प्रति उनकी वफादारी और राजनीतिक प्रतिबद्धता पर भी सवाल उठने लगे हैं।नगर की चौपालों से लेकर सोशल मीडिया तक एक ही चर्चा है कि आखिर इस पूरे घटनाक्रम के पीछे असली कहानी क्या है।इधर यह भी बताया जा रहा है कि स्वागत द्वार निर्माण कार्य की शिकायतें नगरीय प्रशासन और अन्य स्तरों तक पहुंच चुकी हैं।यदि तकनीकी मूल्यांकन होता है और लागत में कमी आती है,तो संबंधित एजेंसी को आर्थिक नुकसान उठाना पड़

सकता है। ऐसे में भुगतान शीघ्र कराने के लिए राजनीतिक समीकरणों को साधने की कोशिश किए जाने की चर्चा भी जोरों पर है।अब सबसे बड़ा सवाल कांग्रेस के सामने खड़ा दिखाई दे रहा है।जिन स्वागत द्वारों को लेकर पार्टी अब तक मुखर विरोध नहीं कर सकी,क्या उसी मुद्दे पर भाजपा में गए नेताओं के परिजनों के खिलाफ कोई आंदोलन खड़ा करेगी। या फिर यह मामला भी सियासी धूल में दबकर रह जाएगा दूसरी ओर जिला कांग्रेस अध्यक्ष निलय डागा जिलेभर में संगठन को नई ऊर्जा देने का प्रयास कर रहे हैं,लेकिन सारनी ब्लॉक की स्थिति कुछ अलग तस्वीर पेश करती नजर आ रही है।संगठनात्मक अनुशासन, आपसी समन्वय और नेतृत्व क्षमता को लेकर उठ रहे सवाल कांग्रेस के लिए चिंता का सबब बन सकते हैं।

सूत्रों का दावा है कि आमला विधानसभा क्षेत्र में बड़े औद्योगिक प्रोजेक्ट आने के बाद कई स्थानीय नेता और कार्यकर्ता भी अपने राजनीतिक भविष्य को लेकर नए विकल्प तलाश रहे हैं।यदि यह सिलसिला जारी रहा तो कांग्रेस को संगठनात्मक क्षति उठानी पड़ सकती है।

फिलहाल सारनी की सियासत में यह घटनाक्रम किसी अधूरे अफसाने की तरह है,जिसके कई पन्ने अभी खुलना बाकी हैं।आने वाले दिनों में कांग्रेस संगठन इस पर क्या रुख अपनाता है और भाजपा को इसका कितना सियासी फायदा मिलता है,इस पर सबकी निगाहें टिकी हुई हैं। इतना जरूर है कि इस पूरे प्रकरण ने नगर की राजनीतिक फिज़ाओं में हलचल पैदा कर दी है और सियासत की बिसात पर कई नए सवाल छोड़ दिए हैं।

स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक मधुवर मोहन द्विवेदी द्वारा इंडिपेंडेट प्रेस, 11 प्रेस काम्पलेक्स, एमपी नगर जोन-1 भोपाल 462023 म.प्र. से मुद्रित एवं 201 ब्लाक ई, सागर प्रीमियम टावर जेके हॉस्पिटल, कोलार रोड, भोपाल म.प्र. से प्रकाशित।
(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल न्यायालय रहेगा) संपादक- सुनील यादव, समाचार संपादक- राहुल कौशिक। फोन नं. 0755-4262585-9425006706, मो. नंबर 9826697203, 9926288166, RNI.No. MPHIN/2020/78949